गुरु रामसिंह और कूका विद्रोह



Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com





Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

Contact Details

For further information - please contact

Email: NamdhariElibrary@gmail.com

kirpal singh chana



भारतीय इतिहास के निर्माता

गुरु रामसिंह और कूका विद्रोह

रामशरण विद्यार्थी

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जनवरी, 1972 • माघ 1893

कूका विद्रोहियों की बलिदान-शताब्दी के अवसर पर
17 जनवरी, 1972 को प्रकाशित ।

मूल्य : 1·25

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,
पटियाला हाउस, नई दिल्ली-1 द्वारा प्रकाशित

क्षेत्रीय कार्यालय :
बोटावाला चैम्बर्स, सर फीरोजशाह मेहता रोड, बम्बई-1
आकाशवाणी भवन, कलकत्ता-1
शास्त्री भवन, 35, हैडोस रोड, मद्रास-6

राकेश प्रेस, अजीज गंज, दिल्ली-6 द्वारा मुद्रित ।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान् सेनानी सद्गुरु रामसिंह के विषय में लोग बहुत कम जानते हैं। इसका एक कारण यह है कि विदेशी शासन ने इस बात की पूरी कोशिश की कि लोग उन्हें भूल जाएं। सन् 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजी शासन को सर्वप्रथम गुरु रामसिंह के अनुयायी कूका विद्रोहियों का सामना करना पड़ा था। कूका सिख बड़े ही देशभक्त और स्वतंत्रता के लिए बलिदान की प्रेरणा देने वालों में अग्रणी थे। सद्गुरु के नेतृत्व में सबसे पहले उन्होंने विदेशी वस्त्रों और सरकारी दफ्तरों का बहिष्कार और असहयोग का प्रयोग आजादी की लड़ाई के अस्त्र के रूप में किया। उन्होंने अपनी डाक व्यवस्था और अदालतें भी चलाईं। अंग्रेजों ने उनका बड़ी क्रूरता से दमन किया। 17 जनवरी, 1872 को बहुत से कूके, बिना किसी अदालत के न्याय के, तोप से उड़ा दिए गए। इस बलिदान को अब सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर 'भारत के इतिहास निर्माता ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत हम सद्गुरु रामसिंह का जीवन-चरित्र प्रकाशित कर रहे हैं, जो देश से निकाल दिए गए और बर्मा में 14 साल नजरबन्द रहे।

यद्यपि गोरक्षा कूका कार्यक्रम का एक अंग था, लेकिन इस आंदोलन को किसी प्रकार भी साम्प्रदायिक नहीं कह सकते। इतिहास के क्रम में बड़ी-बड़ी घटनाएं अक्सर छोटे-छोटे कारणों को लेकर शुरू हुई हैं, जैसे 1857 का विद्रोह। यद्यपि इसका आरम्भ चर्बी के कारतूसों के कारण धार्मिक भावनाएं उभरने से हुआ, पर यह विद्रोह किसी रूप में साम्प्रदायिक न होकर पूरी तरह राष्ट्रीय था। धार्मिक भावना ने तो विस्फोटक परिस्थिति में सिर्फ एक चिनगारी का काम किया।

पुस्तक लिखने में नामधारी सिखों के प्रधान कार्यालय, दिल्ली, से जो सहायता मिली है उसके हम आभारी हैं।

—सम्पादक

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

विषय-सूची

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com



Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अंग्रेजों ने भारतभूमि पर विजय प्राप्त की, परन्तु वे इस देश की आत्मा पर विजय न प्राप्त कर सके। दिल्ली पर उनके शासन की अभी शताब्दी भी पूरी नहीं हो पाई थी कि यहां के सपूतों के मुक्ति-संग्राम के सामने उन्हें झुकना पड़ा और वे भारत छोड़ने को मजबूर हुए।

विदेशी शासन के प्रति विरोध ने विविध रूप धारण किए। प्रतिक्रिया का मुख्य रूप मनोवैज्ञानिक क्रांतिथी जिससे एक तरह की नैतिक जागृति हुई। भारतवासियों में अतीत का गौरव और आत्मसम्मान जाग उठा। देश ने अपने सत्य, सनातन सिद्धान्तों को पाश्चात्य भौतिकवाद के विरुद्ध पुनर्स्थापित किया। इस नव-जागृति ने विदेशी शासन के विरुद्ध केवल अहिंसात्मक आंदोलन का नहीं, किन्तु सशस्त्र संग्राम का रूप लिया। यह संग्राम भारतव्यापी था और इसमें पंजाब, देश के किसी अन्य भाग से पीछे नहीं था। भारत में जहां भी अत्याचार हुआ, वहाँ उसके विरोध में मरने वालों की कभी कमी नहीं थी।

भारत सदा से धर्म-प्रधान देश रहा है। धर्म से दूसरों के लिए बलिदान करने और प्राणिमात्र के हित में लगे रहने की प्रेरणा मिलती है। यहां के महापुरुष धर्म-पालन पर सदा बल देते रहे और धर्म के लिए स्वयं को बलिदान करने में नहीं झिझकते थे। इस भावना से सभी धर्मानुयायियों को साहस, निर्भयता, दृढ़ता और प्रेम की प्रेरणा मिलती रही। यहां के शहीदों का प्रेरणात्मक मूलमंत्र रहा है:

सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर सोय।
जैसे बाती दीप की, कटे उजारा होय॥

पंजाब जब अंग्रेज भारत में अपने राज्य की नींव डाल रहे थे उस समय पंजाब में केसरी महाराजा रणजीतसिंह का एकछत्र राज्य था। देश समृद्धिशाली और धन-

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

धान्यपूर्ण था। रणजीतसिंह की सेना में शामिल होने में पठान और विदेशी भी गर्व अनुभव करते थे। उनका शासन न्याय पर आधारित था। वह हिन्दू, मुसलमान और सिखों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखते थे। रणजीतसिंह के शासन का इतना प्रबल प्रभाव था कि चोर और डाकू भी अपना अपराध स्वीकार कर सेना में भर्ती हो जाते थे। रणजीतसिंह की धारणा थी कि यदि प्रजा दुखी है तो राजा को अवश्य ही नरक प्राप्त होगा। वह स्वयं जनता की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भेष बदल कर भ्रमण करते थे। उन्होंने अपने राज्य में गोवध बन्द कर रखा था। इस आज्ञा का कारण धार्मिक भावना के अतिरिक्त मानवहित की चेतना थी। महाराजा रणजीतसिंह का वैभवशाली राज्य और प्रभावशाली व्यक्तित्व अंग्रेजों और पठानों को एक चुनौती थीं। परन्तु दुर्भाग्य से वह तेजस्वी सूर्य 27 जून, 1839 को अस्त हो गया। उसके बाद पंजाब पर जो बीती, वह बड़ी दुःखद कहानी है। महाराजा खड़गसिंह, महाराजा नौनिहाल सिंह तथा महाराजा शेरसिंह ने बहुत थोड़े दिनों तक राज्य किया। दलीपसिंह केवल पांच वर्ष की आयु में सिंहासनारूढ़ हुए। उनके संरक्षक बनकर अंग्रेजों ने राजमाता को पुत्र से पृथक् कर पहले शेखपुर के किले में और बाद में संयुक्त प्रान्त में चुनार के किले में बन्दी बनाया। इसके बाद 29 मार्च, 1849 को प्रातः 7 बजे स्वतंत्र पंजाब का अन्तिम राजदरबार लगा जिसमें बालक दलीपसिंह अपने पिता के राजसिंहासन पर अन्तिम बार सुशोभित हुआ। उसी दरबार में उदासी और सन्नाटे के बीच अंग्रेज अधिकारी इलियट और सर हेनरी लारेंस के पधारने पर फारसी भाषा में घोषणा की गई कि अब पंजाब अंग्रेजी राज्य में विलय किया जाता है। उस समय विरोध प्रदर्शन के मध्य उस अबोध बालक दलीपसिंह के सामने वह घोषणा-पत्र रखा गया जिस पर उस बालक महाराजा के हस्ताक्षर करा के उसे सदा के लिए पंजाब राज्य से हटा दिया गया और राज दरबार समाप्त हुआ। लाहौर के शाही किले पर फहराता हुआ स्वतंत्रता का झण्डा उतार लिया गया और उसकी जगह अंग्रेजी साम्राज्य का झण्डा यूनियन जैक फहराया गया। महाराजा रणजीतसिंह के तोशाखाने का बहुमूल्य सामान नीलाम कर दिया गया। सोना, चांदी और जवाहरात अंग्रेज सरकार ने अपने अधिकार में ले लिए। महाराजा दलीपसिंह को लार्ड डलहौजी के आदेशानुसार 21 दिसम्बर, 1849 को पंजाब से हटाकर पहले तो फतेहपुर सीकरी में रखा गया। बाद में 8 मार्च, 1853 को धर्म-परिवर्तन कराके अगले साल इंगलैंड भेज दिया गया।

इस समय पंजाब की राजनैतिक स्थिति पतन की चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी। राष्ट्र में अपने पुनरुद्धार का साहस नहीं बचा था और न पर्याप्त साधन

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

ही उपलब्ध थे। पंजाब की सामाजिक और धार्मिक दशा भी इतनी पतित थी कि सिक्ख और हिन्दू मृतप्राय हो रहे थे। बालिकाओं का वध और विक्रय प्रचलित था। बाल-विवाह के कारण विधवाओं की संख्या उत्तरोत्तर वृद्धि पर थी। विधवा-विवाह वर्जित होने के कारण विधवाएं आजन्म दुःखद जीवन व्यतीत करने के लिए विवश थीं।

इस प्रकार गुरु गोबिंद सिंह के बाद और अंग्रेजी सत्ता के आने पर पंजाब में कोई धार्मिक नेता नहीं था। गुरु गोविन्दसिंह के बाद गुरु बालकसिंह कुछ समय तक सिखों के धार्मिक नेता रहे। परन्तु उन्होंने गुरु गोविन्दसिंह की तरह राजनीति में ज्यादा भाग नहीं लिया।

अंग्रेजी राज्य में पंजाब में सबसे प्रथम जो महापुरुष अवतीर्ण हुए, वह थे सद्गुरु रामसिंह जी महाराज। यह गुरु बालकसिंह जी के उत्तराधिकारी थे। गुरु-गद्दी पर आसीन होते ही इन्होंने एक नए पंथ का सूत्रपात किया जो नामधारी या कूका नाम से विख्यात हुआ। समय की आवश्यकता और देश की राजनैतिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, गुरु रामसिंह ने धर्म और राजनीति को एक साथ जोड़ दिया। इस मिश्रण से जो नया पंथ प्रचलित हुआ, उसकी भारत में अंग्रेजी राज्य से सीधी टक्कर हुई। स्वधर्म और स्वराज्य के लिए ऐसा संघर्ष उस जमाने के लिए बड़ी क्रांतिकारी बात थी।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में गुरु रामसिंह और उनके द्वारा संचालित नामधारी-कूका आन्दोलन का एक विशेष स्थान है। इस आन्दोलन के महत्व से कम लोग परिचित हैं। इसमें कोई विस्मय की बात नहीं क्योंकि विदेशी शासन ने इस बात की पूरी कोशिश की कि लोग इन वीर क्रांतिकारियों को, जिन्होंने अपना जीवन बलिदान किया और यातनाएं सहन कर देश में नवजीवन का संचार किया, सदा के लिए भूल जाएं। यह इतिहास और समय की विडम्बना तथा देश का दुर्भाग्य है कि सद्गुरु रामसिंह जैसे महान् तपस्वी, देशभक्त और लोकनायक तथा उनके सहयोगी सूबों को, बिना कोई अपराध सिद्ध किए, बिना मुकदमा चलाए, आजीवन देश-निष्कासन का घोर दण्ड दिया गया। उनके निर्दोष अनुयायियों पर सन् 1872 से 1947 तक निरन्तर दमन-चक्र चलाकर अंग्रेजी सरकार ने जो अत्याचार किए, उसकी कहानी तो इतनी भयानक और लम्बी है कि वह एक अलग पुस्तक का विषय बन सकती है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

इस पुस्तक में गुरु रामसिंह के जीवन की घटनाएं विश्वस्त सरकारी और गैरसरकारी पत्रों, लेखों आदि के आधार पर दी गई हैं। इसे पढ़ने पर यह तो न कहा जा सकेगा कि : "लोग तो भूल ही जाएंगे हम दीवानों के अफसाने को !" आज़ादी के एक दीवाने गुरु रामसिंह का ही अफसाना यहां प्रस्तुत है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

पंजाब और अंग्रेज

जब ईस्ट इंडिया कम्पनी के अंग्रेज अधिकारी राज्य-स्थापना की आकांक्षा से कूटनीति के आधार पर देश में अपना शासन जमाने के प्रयत्न में लगे थे, तब पंजाब में महाराजा रणजीतसिंह का राज्य था। रणजीतसिंह न्याय-प्रिय, कर्त्तव्यपरायण और प्रजा-सेवी होने के साथ कुशल और दृढ़ शासक भी थे। उनका दबदबा चारों ओर था। समृद्धिशाली और सुखी प्रजा के हृदय-सम्राट महाराजा रणजीतसिंह 27 जून, 1839 को स्वर्ग सिधारे। इससे अंग्रेजों को अपनी मनचाही करने का अवसर मिल गया। दस वर्ष में ही सारे पंजाब के मान-चित्र का रंग ही बदल गया और पंजाब भी पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ दिया गया।

अंग्रेजों के अत्याचारों के फलस्वरूप पंजाब में सद्‌गुरु रामसिंह के नेतृत्व में कूका आन्दोलन का जन्म हुआ। यह आन्दोलन जनता का था और अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध निश्चित विद्रोह था। भारतीयों ने प्लासी में 1757 की पराजय को कभी भी स्वीकार नहीं किया। न वह कभी मौन रहे और न अंग्रेजों को चैन से रहने दिया। 1761 से 1840 तक निरन्तर अंग्रेजों की सेनाओं से युद्ध होता रहा। इन वीरों में थे बिहार के ताना भगत, संथाल, गोंड, भील, कोल, नागा, पूर्वी बंगाल के तीतू मियां के नेतृत्व में मुसलमान, भरतपुर के जाट, गूजर, रुहिल्ले, पिण्डारी, पश्चिमोत्तर भारत के पठान, सिन्धी, कांगड़ा और होशियारपुर के डोगरा राजपूत और सिख। ये सब पराजित हुए और इनका निर्दयता से वध किया गया। इनके नेता या तो फाँसी पर चढ़ाए गए, देश-निष्कासित किए गए, या राज-बन्दी बना कर किलों या जेलों में मृत्यु-पर्यन्त रखे गए।

सन् 1849 में लाहौर को अंग्रेजी राज्य में मिलाकर, अल्पवयस्क महाराजा दलीपसिंह को विलायत ले जाया गया जहाँ वह 1893 में स्वर्गवासी हुए। पंजाबी अंग्रेजी राज से घृणा करते थे। उनका विचार था कि अंग्रेजों ने पंजाब को समर-

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

भूमि में पराजित नहीं किया, अपितु विश्वासघात, कपट, कूटनीति और पंजाबी को पंजाबी से लड़ाकर विजय प्राप्त की। अंग्रेजी राज के प्रारम्भिक दिनों में बहुत से लोग फिरंगी हाकिमों से हाथ मिलाने में धर्म और शरीर भ्रष्ट होगा, ऐसा समझते थे। पंजाब में अन्दर-अन्दर विद्रोह की ज्वाला धधकने लगी और सीमान्त के निवासियों के आक्रमण होने लगे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बोर्ड आफ मैंनेजमेंट के प्रथम प्रधान सर हैनरी लारेन्स की नीति थी कि जनता के विभिन्न पक्षों में पारस्परिक द्वेष के बीज बोए जाएं जिससे वह मानसिक एकता, भ्रातृ-भाव और क्षेत्रीय राष्ट्रीयता टूक-टूक हो जाए जो पंजाबियों में महाराजा रणजीतसिंह के काल (1799-1839) में विकसित और सुदृढ़ हुई थी।

पंजाब में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का निर्दयता से दमन किया गया। विद्रोहियों को दण्ड देने के लिए एक अंग्रेज सेना कर्नल नेविसन के नेतृत्व में भेजी गई। यह घटना मेरठ में सैनिक विद्रोह से कुछ मास पूर्व हुई थी। मेरठ के सैनिकों ने विद्रोह का शंखनाद किया और प्रथम स्वतंत्रता संग्राम प्रारम्भ हुआ। कर्नल नेविसन को पटियाला और जींद राज्यों में ही रहने का आदेश दिया गया। गुरु रामसिंह गंगा के सैंड़ाल की घटनाओं के प्रति सतर्क रहे।

मुगल सिखों से घृणा करते थे। औरंगजेब ने जिस प्रकार विश्वासघात और अत्याचार से पंजाब को अपने राज्य में मिलाया था और गुरु तेगबहादुर की हत्या की थी, उसे सिख भूले नहीं थे। इस कारण उन्होंने दोनों प्रतिद्वन्द्वियों को परस्पर अन्त तक लड़ते को छोड़ दिया था। जब दिल्ली की स्थिति बहुत बिगड़ चुकी तो बूढ़े बादशाह बहादुरशाह ने सिखों से धर्म-युद्ध में शीघ्रता से भाग लेने की प्रार्थना की और साथ ही अपने पद-त्याग का भी वचन दिया। परन्तु तब समय निकल चुका था।

जब पंजाब की यह स्थिति थी तो अंग्रेज पंजाब के सिखों की राज-भक्ति के गीत गाकर उन सिख सैनिकों पर मिथ्या प्रभाव डालने में व्यस्त थे जो कम्पनी की सेवा में इलाहाबाद, पटना और बंगाल में रहते थे ताकि वे राजभक्त बने रहें। पंजाब का धनी वर्ग, पूंजीपति, सेठ-साहूकार, राजा-महाराजा, अंग्रेजों के साथ हो गए थे। सारे सामाजिक और धार्मिक संगठन प्रायः टूट चुके थे। उस समय पंजाब की यह स्थिति हो गई थी कि राजनैतिक रूप से केवल सिखों में ही नहीं किन्तु सारे पंजाब में जीवन-स्फूर्ति प्रायः समाप्त हो चुकी थी। सिख सरदारों और जागीरदारों में स्वाभिमान नहीं रह गया था। देशहित की भावना नष्टप्राय हो चुकी थी। राजनैतिक दुर्दशा के साथ ही सामाजिक और धार्मिक पतन भी चरम सीमा पर था।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

सिख सेनाएं तोड़ी जा चुकी थीं। पाश्चात्य सभ्यता और विलासिता का बोलवाला था। धार्मिक और सामाजिक कुरीतियों के कारण हिन्दू-सिख समाज की दशा दयनीय थी। साहस और शक्ति का पूर्णतः ह्रास हो चुका था। वास्तव में देश और जाति की दुर्दशा इस अवस्था को पहुंच चुकी थी कि जन-मानस पथ प्रदर्शन और सशक्त नेतृत्व की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

स्वतंत्रता संग्राम तथा पंजाब

1849 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने महाराजा दलीपसिंह की छोटी उम्र में जिस प्रकार पंजाब को अपने राज्य में मिलाया वह पंजाब के लोगों, और विशेषतः सिखों के लिए अविस्मरणीय दुर्घटना थी। इसके बाद 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम हुआ। पंजाब के लोगों के दिलों में अंग्रेजों के अत्याचारों के घाव अभी ताजे ही थे। फिर भी पंजाब के सिखों को अंग्रेजों के प्रति राजभक्ति और देशद्रोह के घोर पाप से कलंकित किया गया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की देशी सेनाओं में मुट्ठी भर सिख सैनिक थे। पटियाला तथा जींद के राजाओं का सहयोग कम्पनी को प्राप्त होने के कारण बहुत से विदेशी और भारतीय इतिहासकारों ने सारे सिख समुदाय को राजभक्त मान कर कलंकित किया है। स्मिथ, फारेस्टर, मालेसन जैसे विदेशी इतिहासकारों ने जानबूझकर 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के समय सिख-राजभक्ति की दिल खोलकर प्रशंसा की ताकि सिख और हिन्दुओं में, जिन्होंने एक साथ मिलकर मुगल शासकों से लोहा लिया था, विरोध उत्पन्न हो जाए। हिन्दू और सिख दोनों ही अंग्रेज साम्राज्यवादियों की इस चाल और कुचक्र के शिकार बने।

भारतीय इतिहासकार, जिन्होंने शुरू में स्वतन्त्रता संग्राम पर ग्रन्थ लिखे, अंग्रेज लेखकों के कथनों और तथ्यों पर निर्भर रहे। इसी कारण उन्होंने भी सिखों पर राजभक्ति के आरोप लगाए और इलाहाबाद, पटना, लखनऊ, कानपुर तथा मेरठ के विद्रोहियों के परास्त होने का कलंक भी सिखों पर ही मढ़ा है। वास्तव में यह न उचित है और न सत्य ही। जब विप्लवियों ने बहादुरशाह को हिन्दुस्तान का सम्राट घोषित किया तो साधारणतः सिखों के हृदयों में भय और शंका उत्पन्न हुई और विशेषकर उनके जो कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नौकरी में थे। वही मुगल साम्राज्य

पुनः स्थापित किया जा रहा था जिससे सिखों को घृणा थी। वे बड़ी दुविधा में पड़ गए। अतः कुछ ने यह निर्णय किया कि जो हमारी बात मानेगा उसका हम साथ देंगे। परन्तु सारे समुदाय को केवल कुछ लोगों के कृत्यों के कारण कलंकित करना न्यायोचित नहीं। हिन्दू और मुसलमानों में भी देशद्रोही थे जिनके कृत्यों की चर्चा इतिहासकारों ने केवल कुछ शब्दों में की है। यदि एक ब्राह्मण भेदिये ने विप्लवियों का भेद सर जान लारेन्स को न दिया होता तो मेरठ के सिपाही निर्धारित तारीख से पहले विप्लव प्रारम्भ न करते और सम्भवतः विप्लव का स्वरूप भिन्न होता। परन्तु हमारे इतिहासकारों ने इसे कुछ भी महत्व नहीं दिया और न ही सालारजंग की निन्दा की जिसने हैदराबाद में विप्लव का दमन किया। विभिन्न जातियों के असंख्य लोगों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सहायता की। परन्तु हमारे इतिहासकारों ने केवल सिखों को ही चुनकर कलंकित किया।

हमें देखना चाहिए कि जिन सिखों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी का साथ दिया उनके अतिरिक्त दूसरे सिखों ने उन दिनों पंजाब में क्या किया। जिन्होंने मुगलों का विरोध किया था और अंग्रेजों से घृणा करते थे वे स्वयं को सशस्त्र बनाने में व्यस्त थे। लाखों सिख-गुरु रामसिंह के साथ शपथ ले चुके थे कि वह अंग्रेजों को भारत से निकाले बिना चैन नहीं लेंगे। गुरु रामसिंह ने नामधारी पंथ चला कर कूका आन्दोलन को जन्म दिया। पहले गुरु रामसिंह ने सिखों को अंग्रेजों से असहयोग और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आदेश दिया, बाद में अपनी सेनाओं को गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण दिया।

कर्नल नेविसन ने कूका आन्दोलन पर लिखा है कि "रामसिंह नाम का एक लम्बा और शक्तिशाली व्यक्ति है जो स्वयं को पंजाब का शासक घोषित करता है। उसके लगभग तीस हजार सशस्त्र अनुयायी हैं। ये वास्तव में उत्तरी पंजाब के आधे भाग पर अधिकार जमाए हैं। यदि इनको अपनी-सी करने दी गई तो ये बहुत थोड़े समय में ही पूरे पंजाब को हड़प जाएंगे। कुछ कूके भेदिये मेरे कैम्प के निकट घूमते हुए पकड़े गए। उनको मृत्यु के घाट उतार दिया गया। परन्तु उनको अन्य सिख सिपाहियों के सामने मारना भयंकर है क्योंकि वे हमारे खिलाफ विद्रोह कर बैठेंगे। कुछ सिपाहियों ने हमारा साथ छोड़ दिया है। अतः शेष को मेरठ वापिस भेज दिया गया। रामसिंह ने जाति भेद मिटा दिया है। विधवा विवाह की अनुमति दे दी है। इस कारण एक जाति को दूसरे के विरुद्ध लड़ाना सम्भव नहीं रहा। वे सब एक साथ मिलकर लड़ते हैं। आर्थिक रूप से भी आन्दोलन सुदृढ़ है क्योंकि रामसिंह गुरु

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

गोविन्दसिंह के नाम पर कर वसूल करता है। वह मेरी सेना का सामने से डटकर विरोध नहीं करता। वह पीछे से आक्रमण कर परेशान करता है।"

1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के समय कर्नल नेविसन पटियाला और जींद रियासत में ही रहे। गुरु रामसिंह परिस्थिति का अध्ययन करते रहे।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

सद्‌गुरु रामसिंह का प्रारम्भिक जीवन

श्री सद्‌गुरु रामसिंह जी का जन्म 1816 की वसन्त पंचमी को लुधियाना जिले के भैंणी गांव में हुआ था। इनके पिता बाबा जस्सासिंह एक गरीब रामगढ़िया थे। इनकी शिक्षा-दीक्षा इनकी माता सदाकौर द्वारा घर में ही हुई थी। इनकी माँ इन्हें प्रतिदिन महाभारत, भागवत, रामायण और सिख गुरुओं की जीवन-कथाएं सुनातीं। रामसिंह जी की बचपन से ही भक्तिमार्ग की ओर प्रवृत्ति थी। रोज धर्मशाला (गुरुद्वारा) जाने की परिपाटी के कारण उनको संत-वाणी कंठस्थ थी। वे उसे अपने बाल-साथियों में बड़े प्रेम से गाया करते थे। रामसिंह जी के शब्द-कीर्तन से वे मुग्ध हो जाते थे। कभी-कभी जनता के आग्रह पर वह सभा में भी शब्द कीर्तन करते थे। बचपन में प्राप्त शिक्षा के फलस्वरूप भक्ति और निर्भीकता के गुणों का उनमें भरपूर विकास हुआ।

1836 में बीस वर्ष की आयु में वह महाराजा रणजीतसिंह की सेना में नौनिहालसिंह रेजिमेंट में भर्ती हो गए। परन्तु वह अधिकतर ईश्वरोपासना में संलग्न रहते थे। अपनी नौकरी के काम से अवकाश पाते ही वह गुरुद्वारे जाकर गुरुवाणी का पाठ करते और जनता को सन्त-वाणी सुनाते। सैनिक तथा सांसारिक कार्यों में उनका मन नहीं लगता था। इसी अवधि में सामाजिक स्थिति का निकट से अध्ययन करके वह विह्वल हो उठे। मन में वैराग्य की भावना प्रदीप्त हो उठी। 1845 में सिख सरदारों का चरित्र-पतन देख कर वह अपनी बन्दूक सतलज में फेंक कर अपने गांव भैंणी चले गए। गुरु रामसिंह का विवाह माता जस्सा से हुआ था जिनसे दो कन्याओं का जन्म हुआ।

1841 में जब गुरु रामसिंह जी एक बार अपनी पलटन के साथ पेशावर जा रहे थे तो मार्ग में हजरो नगर में श्री गुरु बालकसिंह जी से नाम-दीक्षा प्राप्त की थी।

इसके बाद भी उनके दर्शनों को एक बार और गए थे। अवकाश ग्रहण करने पर गुरु रामसिंह जी तीसरी बार श्री गुरु बालकसिंह जी के दर्शनार्थ हज़रो गए। गुरु जी का रामसिंह जी पर बड़ा प्रभाव था। गुरु बालकसिंह जी को भी रामसिंह में सर्वगुण-सम्पन्न उत्तराधिकारी मिल गया।

बाबा गुरु बालकसिंह ने गुरु रामसिंह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करते समय कहा था :

> "देश और जाति की बिगड़ी हुई दशा सुधारने के लिए कमर कस लो। जब तक कोई देश विदेशियों के कब्जे में रहे तब तक वह आत्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति नहीं कर सकता। इसलिए अब देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने की परम आवश्यकता है।"

गुरु रामसिंह बाबा बालकसिंह की मृत्यु के बाद भैणी गाँव में ही गुरु-गद्दी पर आसीन हो रहने लगे। शान्तिपूर्वक भगवद् भजन में लगे रहने के कारण गुरु राम सिंह बहुत प्रसिद्ध हो गए। दूर-दूर से लोग उनके दर्शनों को आने लगे। उन्होंने अपने समाज की बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष प्रारम्भ किया। इसी के बाद गुरु रामसिंह कटिबद्ध हो राजनैतिक क्षेत्र में उतर आए। जिस धार्मिक पंथ के वह गुरु थे वह नामधारी नाम से विख्यात हुआ।

इसके बाद गुरु रामसिंह ने यही ललकार या कूक दी जिससे वह कूका कहलाए :

> आ गया है कर्मयुग कुछ कर्म करना सीख लो।
> देश, धर्म और जाति हित हँस-हँस कर मरना सीख लो।
> मारने का नाम मत लो, पहले मरना सीख लो।
> देश को स्वतंत्र करना है तो दब-दब कर उभरना सीख लो।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

धर्माधारित राजनीति और नामधारी पंथ

गुरु वालकसिंह की गद्दी पर आसीन होते ही परम्परागत धार्मिक भावनाओं के साथ-साथ सद्गुरु रामसिंह के हृदय में देश की दशा सुधारने का विचार बड़े वेग से हिलोरें मारने लगा। समाज में फैली अनेकों बुराइयों को दूर करने और धर्म को आधार बनाकर राजनैतिक कार्य करने की भावना को उन्होंने महत्व दिया। इन्हीं आदर्शों से प्रेरित होकर 13 अप्रैल, 1857 (वैसाखी दिवस) को सद्गुरु राम सिंह ने उस नए संगठन की नींव रखी जिसे 'नामधारी पंथ' के नाम से ख्याति प्राप्त हुई। उसी दिन उन्होंने अपना सफेद तिकोना झण्डा फहराया था और अपने अनुयायियों को मूल सिद्धान्त समझाए थे।

गुरु रामसिंह ने अपने अनुयायियों को सदाचारी बनाने के उद्देश्य से मदिरा पान, मांसाहार, झूठ, चोरी, व्यभिचार तथा सूदखोरी को सर्वथा निषिद्ध घोषित किया। उन्होंने पंजाब में कन्या-वध की प्रचलित कुप्रथा को भी समाप्त किया। स्त्रियों का क्रय-विक्रय तथा विवाह में दहेज प्रथा और व्यर्थ की खर्चीली रस्मों का अन्त किया। विधवा-विवाह की प्रथा चलाई। उन्होंने गोवध तथा पाश्चात्य सभ्यता के अनुसरण का विरोध किया।

नामधारी पंथ की स्थापना के समय गुरु रामसिंह ने खण्डे का अमृत तैयार किया। यह अमृतपान स्त्री-पुरुष सभी को कराके गुरुजी ने एक नयी क्रान्तिकारी परिपाटी को जन्म दिया। इससे पूर्व महिलाओं को अमृतपान कराने की प्रथा नहीं थी। इस पंथ में कुछ और नई बातों का समावेश किया गया। सादे रहन-सहन पर जोर दिया गया।

नामधारियों की वर्दी निश्चित की गई—सिर पर एक विशेष प्रकार की खादी की पगड़ी, सफेद खादी का कुर्ता और सफेद खादी का पायजामा तथा गले में

सफेद ऊन की माला और मुख में वाहगुरु का नाम। यह लोग नल का पानी तक नहीं पीते थे। नदी या कूप के जल का उपयोग करते थे। यह हवन-यज्ञ आदि भी करते। गो-सेवा इस पंथ का एक प्रमुख कर्त्तव्य है। नामधारी स्वयं को प्रथम हिन्दू और बाद में सिख मानते हैं। गुरु रामसिंह का मत था कि सिख धर्म स्वतन्त्र नहीं, किन्तु हिन्दू धर्म की ही एक शाखा है।

सबसे पहले गुरु रामसिंह ने विवाह पद्धति को भी इतना सरल कर दिया कि उनके नेतृत्व में एक ही समय और स्थान पर बहुत से विवाह एक साथ ही सम्पन्न हुए। एक विवाह पर केवल सवा रुपया मात्र व्यय होता था। इस शुभ विवाह पद्धति का नाम 'आनन्द कारज' रखा गया। यह आज भी सिख समाज में प्रचलित है। एक विशेष बात यह भी थी कि गुरुजी ने जात-पाँत का भेद उठा दिया।

इन सभी बातों का नामधारी सिख पालन करते थे। दिनों-दिन यह आचरण परम्परा और परिपाटी का रूप धारण करता गया। रामसिंह जी के इन पवित्र और समाजसुधार के कार्यों की चर्चा सर्वत्र बड़े वेग से फैल रही थी। लोग उनके दर्शन तथा उपदेश सुनने आते और नामधारी पंथ में सम्मिलित हो जाते। गुरु रामसिंह जी ने आदि ग्रंथ, श्री दशम ग्रन्थ, तथा श्री गुरु गोविन्द सिंह के सन्देश का प्रचार बड़े साहस और निर्भीकता से किया। उनका प्रचार-कार्य धार्मिकता और साथ ही देश की स्वाधीनता प्राप्ति की दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण था। गुरु रामसिंह ने स्वधर्म और स्वराज्य के महान् संघर्ष के लिए पंजाब में इस संगठन को विस्तृत, दृढ़ और इतना सबल बनाया कि यह एक पंजाबव्यापी आन्दोलन बन गया।

गुरु रामसिंह ने देखा कि पंजाब का अपनी स्वतन्त्रता खोने का एक कारण यह भी था कि लोग धर्म विमुख हो गए थे। वह इस निश्चय पर पहुंचे कि आजादी हासिल करने के लिए हिन्दू और सिख समाज की बुराइयों को दूर कर लोगों को चरित्रवान और दृढ़-संकल्प बनाना जरूरी है।

नामधारी सिखों ने सद्गुरु रामसिंह की आज्ञाओं का पूरी सावधानी से पालन किया। नाम और गुरुवाणी के अभ्यास से उनमें एक प्रकार की ज्योति जागृत हुई। वे जहाँ भी गए नाम की सुगन्धि फैल गई। जो लोग उनके सम्पर्क में आते वे अपनी गाँव में जाकर सद्गुरु के दर्शन करते। श्री गुरु ने आसपास के गाँवों में दौरा किया और सैकड़ों नर-नारियों को नाम देकर ईश्वरभक्ति में दृढ़ किया। सद्गुरु जी के प्रचार का ऐसा प्रभाव हुआ कि गाँव-गाँव व घर-घर में उनके आन्दोलन की चर्चा

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

थी। सुधार का कार्यक्रम बड़ी सफलता से चल निकला। लोगों ने प्रचलित कुरीतियों का त्याग किया। गाँव-गाँव में दीवान, सत्संग और कीर्तन होते। ऐसा प्रतीत होने लगा था कि निर्जीव सिखों में नवजीवन का संचार हो गया है।

सद्‌गुरु रामसिंह जी के प्रेममय सदुपदेश और तेजस्वी व्यक्तित्व से हिन्दू ही नहीं वल्कि मुसलमान भी आकर्षित और प्रभावित हुए। उनके धार्मिक और सामाजिक सुधारों से हिन्दू और सिखों को समान रूप से लाभ पहुंच रहा था। उनके रहन-सहन और प्रचार से पश्चिमी सभ्यता की प्रगति में बड़ी भारी बाधा उत्पन्न हो गई। अंग्रेजों ने इस बात को समझा। परन्तु आन्दोलन के धार्मिक और सामाजिक होने के कारण उन्होंने इसे रोकने की विशेष आवश्यकता नहीं समझी।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

कूका असहयोग आंदोलन

सद्गुरु रामसिंह ने भारत माता की दासता की बेड़ियां तोड़ फेंकने के अभिप्राय से अपने अनुयायियों तथा जनसाधारण को उच्च स्वर से सर्वस्व बलिदान करने की प्रथम ललकार या कूक दी। इस कूक देने के कारण ही इनका आंदोलन और उसमें सक्रिय भाग लेने वाले कूका कहलाए। गुरु ने देश को स्वतंत्र कराने और राजनैतिक उत्थान के हेतु देशभक्ति, गोभक्ति तथा विश्वबंधुत्व की महान् भावनाओं का प्रचार किया।

सद्गुरु रामसिंह वास्तव में महात्मा गांधी के स्वदेशी, बहिष्कार और असहयोग आंदोलन के अग्रदूत थे। 1935 में डा० राजेन्द्रप्रसाद का कूका आंदोलन पर एक लेख पंजाब के 'सतयुग' (साप्ताहिक) में प्रकाशित हुआ था। उसमें उन्होंने दृढ़तापूर्वक प्रतिपादित किया था कि गुरु रामसिंह राजनैतिक स्वतंत्रता को धर्म का अंग मानते थे।

नामधारियों का संगठन बड़ा सुदृढ़ था। बहिष्कार और असहयोग आंदोलन का, जिसे महात्मा गांधी ने जोरों से चलाया, गुरु रामसिंह ने पचास वर्ष पूर्व प्रचार किया था। उन्होंने सामाजिक तथा धार्मिक कार्यक्रम के अतिरिक्त, राजनैतिक कूका आंदोलन में भाग लेने वालों को निम्नलिखित कार्यक्रम पूरा करने का आदेश दिया :

1. कूका ईस्ट इंडिया कंपनी की नौकरियां स्वीकार न करें।
2. अंग्रेजों की चलाई शिक्षा-संस्थाओं में न पढ़ें।
3. गवर्नर-जनरल और अधीन अधिकारियों द्वारा जारी किए गए आदेशों का पालन न करें।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

4. विदेशी वस्त्र का बहिष्कार करें ।

5. सरकारी अदालतों, रेलों और डाकतार व्यवस्था का बहिष्कार करें ।

नामधारी विद्रोह उस आंदोलन का ही भाग था जो सिखों के पुनरुत्थान के लिए गुरु गोविंद सिंह ने 17वीं शताब्दी में चलाया था । रणजीतसिंह के समय में सिखों की जो शक्ति थी, उसे एक बार फिर प्राप्त करने की इच्छा ने नामधारी आंदोलन का रूप लिया । धर्म के आधार पर गुरु गोविंद सिंह औरंगजेब से लड़े थे । गुरु रामसिंह ने भी आजादी को धर्म के अंग के रूप में स्वीकार किया । कूका आंदोलन में सामाजिक सुधार, धार्मिक पुनरुत्थान और राजनैतिक स्वतंत्रता एक में सम्बद्ध थे । रणजीतसिंह के समय के राजनैतिक गौरव को प्राप्त करना उनके धर्म का अंग था ।

कुछ लोगों का मत है कि गुरु रामसिंह के आंदोलन का उद्देश्य शुरू में केवल धार्मिक और सामाजिक था पर गोहत्या के प्रश्न को ले कर उसने राजनीतिक रूप धारण किया । पर यह सही नहीं लगता क्योंकि कूका धर्म के सिद्धांतों का राजनैतिक स्वरूप शुरू से ही स्पष्ट था । अलग से अपनी डाक-व्यवस्था से समानान्तर सरकार के स्थापन की ध्वनि उठती है । किसी धार्मिक आंदोलन को ऐसी व्यवस्था की क्या जरूरत हो सकती थी ! गुरु गोविंद सिंह की तरह गुरु रामसिंह भी उसी को 'नाम' देते थे जो उनके लिए जीवन बलिदान करने का वचन देता । इससे भी कूका आंदोलन का राजनैतिक रूप स्पष्ट हो जाता है । सरकार से असहयोग और स्वदेशी के प्रचार के धार्मिक कारण क्या हो सकते थे ?

सन् 1872 और 1881 के बीच सरकार ने बर्मा में निर्वासित गुरु द्वारा लिखे बहुत से पत्र पकड़े । इन पत्रों से उनके राजनैतिक उद्देश्य साफ़ प्रकट होते हैं । उन्होंने अंग्रेजी राज्य के खत्म होने और खालसा के उदय का जिक्र किया है । उन्होंने अंग्रेज-अफगानिस्तान युद्ध, रूसियों का काबुल की ओर बढ़ना और दूसरे राजनैतिक सवाल पूछे हैं और अपने स्वदेश लौटने की भविष्यवाणी भी की । गुरु पर कड़े से कड़े प्रतिबंध लगाए गए । फिर भी उनके शिष्य उनसे मिलने पहुंच जाते थे । गुरु अपने अनुयायियों को सरकार से असहयोग करने की शिक्षा देते रहे ।

जवाहरलाल नेहरू ने अपने एक संदेश में कहा था, "श्री सद्गुरु रामसिंह जी ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए आज से 75 वर्ष पूर्व जो महान् गौरवशाली परिश्रम किया था उसकी महानता से कोई भी

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

हिन्दुस्तानी इंकार नहीं कर सकता। कांग्रेस ने आपके दिखाए हुए मार्ग पर चल कर सफलताएं प्राप्त की हैं।"

जब श्री सुभाषचन्द्र बोस 1939 में कांग्रेस अध्यक्ष हुए तो उन्होंने भी अपने एक संदेश में कहा था कि गुरु रामसिंह जी के फहराए हुए आज़ादी के झंडे के नीचे नामधारियों ने जो त्याग और बलिदान किया है उस पर देश को सदा गर्व रहेगा। वास्तव में गुरु रामसिंह जी भारत में असहयोग के सर्वप्रथम नेता थे।

गुरु रामसिंह के जीवन में वह धार्मिक, नैतिक और सामाजिक प्रेरणा के उत्साहप्रद स्रोत थे जिनसे महात्मा गांधी के जीवन और कार्यक्रम को, जाने अथवा अनजाने, बल और वरदान प्राप्त हुआ। उनसे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को पथ-प्रदर्शन मिला। गुरु रामसिंह जी ने जनता के नैतिक उत्थान और उसमें आत्म-विश्वास और आत्म-बलिदान की भावना जगाने का महान प्रयास किया। उनके कार्यक्रम में विदेशी शासन को समाप्त करने के लिए समानान्तर सरकार बनाने की और आर्थिक दासता से मुक्ति पाने की योजना थी। इन सब बातों से बौखला कर पंजाब की अंग्रेजी सरकार ने गुरु रामसिंह के अनुयायियों पर जो अत्याचार किए उनकी लोमहर्षक कहानी इस पुस्तक का प्रमुख विषय है। अंग्रेजी राज प्रारम्भ से ही अन्याय और अत्याचार की भित्ति पर खड़ा था। उसे उखाड़ फेंकने के लिए निहत्थे और असहाय भारतीयों ने जो शांतिमय तथा सशस्त्र संघर्ष किया उसकी श्रृंखला में सद्गुरु रामसिंह का आंदोलन एक शानदार कड़ी है।

गुरु रामसिंह ने अपने अनुयायियों तथा साधारण जनता में भी सर्व-प्रथम विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा स्वदेशी का प्रचार आरम्भ किया, अंग्रेजों के न्यायालयों का सर्वथा बहिष्कार कराया। पारस्परिक विवादों को निपटाने के लिए पंच-मंडली का उपयोग किया। अंग्रेजों के स्कूल-कालेज आदि शिक्षा संस्थाओं का, साथ ही रेल, तार, डाक तथा सरकारी नौकरी के पूर्ण बहिष्कार की प्रेरणा दी। घर-घर में लोग चर्खे चला कर हाथ से कते सूत का कपड़ा बना कर पहनने लगे। नामधारी कूके मोटर और रेल छोड़ कर पैदल अथवा बैलगाड़ी या घोड़ों पर ही चलते थे। कूकों ने अपनी स्वतंत्र डाक-व्यवस्था चलाई। पूरे पंजाब में बिना मूल्य डाक ले जाने और बांटने की व्यवस्था की गई। डाक सेवा का यह कार्य पंजाब में नामधारी-

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

कूकों में स्वतंत्रता-प्राप्ति तक निरन्तर चलता रहा। पंजाब के दूर-दूर के भागों में कूकों को सन्देश भेजने की निश्चित व्यवस्था थी। चार कूके तेजी से पास के गांवों में जाते और विश्वस्त कूकों को जबानी सन्देश सुनाते। वे कूके तुरन्त रवाना हो जाते और यह क्रम चलता रहता।

सद्गुरु रामसिंह ने बाद में अपना कार्यक्षेत्र और विस्तृत किया। सरकार ने बौखला कर कुछ समय के लिए कुछ प्रतिबंध लगा दिए। इसका परिणाम यह हुआ कि गुरु रामसिंह का अधिकतर कार्य गुप्त रूप से होने लगा। पंजाब को 22 सूबों में बांट दिया गया। हर सूबा प्रायः एक जिले के बराबर था। हर भाग का एक शासक नियुक्त किया गया जिसे सूबा कहते थे। यह सूबे न्याय का काम भी करते थे क्योंकि नामधारियों ने अंग्रेजी अदालतों का बहिष्कार कर रखा था। प्रत्येक तहसील और गांव में भी अधिकारी नियुक्त किए गए। गुरुद्वारों में एक ग्रंथी को शिक्षा का काम सौंपा गया। इन सूबों की नियुक्ति से इस बात का संकेत मिलता है कि गुरु अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए स्थाई व्यवस्था कर रहे थे और उनके राजनीतिक उद्देश्य भी थे। उस समय की परिस्थिति के अनुसार यह व्यवस्था जन-जागृति की दृष्टि से अत्यंत प्रभावशाली थी। सूबों ने नामधारी संगठन को दृढ़ बनाया।

इस प्रकार 1863 तक असहयोग कार्यक्रम ने एक महान् आंदोलन का रूप धारण कर लिया। अफसरों ने इस आंदोलन के संबंध में सरकार को ऐसी सूचनाएं दीं जिनके द्वारा इसके नेता को धार्मिक और सामाजिक बताते हुए भी यह कहा गया कि आंदोलन से जनता में असंतोष और अशांति की वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त यह भी आशंका प्रकट की गई कि यह राजनैतिक रूप धारण कर सकता है।

सियालकोट के डिप्टी कमिश्नर मैकनब ने सब से पहले इस सम्बन्ध में यह सूचना दी कि "रामसिंह नामक वृद्ध अपने 200 सेवकों के साथ जिला सियालकोट का भ्रमण कर रहा है। वह अपने अनुयायियों को बन्दूकों के स्थान पर लाठियों से कवायद कराता है। वह किसी अधिकारी का आदेश नहीं मानता। वह वैशाखी का मेला देखने के लिए अमृतसर जा रहा है।"

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

गुरु रामसिंह जब अपने सेवकों सहित 11 अप्रैल, 1863 को अमृतसर पहुंचे तो पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आदेशानुसार लाहौर के डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस, मेजर सैंकी, अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर, मेजर मरे और जिला सुपरिंटेण्डेण्ट सद्गुरु जी के पास पहुंचे। उन्हें गुरु जी के आंदोलन का उद्देश्य जानने का विशेष आदेश था। मरे ने उनसे वार्तालाप करने के बाद सूचना भेजी कि "उनके सेवक हृष्ट-पुष्ट और जवान हैं। उनकी बातचीत का ढंग विद्रोहात्मक नहीं है। वह शांतिमय और गम्भीर प्रकृति के प्रतीत होते हैं। अतएव भरे मेले में उनके कार्यक्रम में हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझा गया।"

इसके बाद 4 जून, 1863 को खोटा ग्राम के चौकीदार ने सूचना दी कि रामसिंह जी और उनके शिष्य सरकार के विरुद्ध विद्रोहपूर्ण भाषण देते हैं। वे कहते हैं कि "देश पर शीघ्र ही हमारा आधिपत्य हो जाएगा। सवा लाख सशस्त्र सिख हमारे साथ होंगे। हम किसानों से उनकी फसल का पांचवां भाग कर के रूप में लेंगे।" गुरु जी द्वारा सरल विवाह-पद्धति के प्रचार से रूढ़िगत विवाह कराने वाले पंडित भी क्रुद्ध हो गए थे।

चौकीदार की सूचना पर एक सार्जेण्ट और पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट खोटा भेजे गए। उन्होंने चौकीदार की सूचना सही मान कर उसका समर्थन किया। फलस्वरूप फीरोजपुर के डिप्टी कमिश्नर ने पंजाब सरकार की आज्ञानुसार कूका दीवान पर प्रतिबंध लगा दिए। सद्गुरु रामसिंह जी को सेवकों सहित उनके गांव पहुंचा देने का आदेश दिया गया। सरकारी आदेशानुसार फीरोजपुर के डिप्टी कमिश्नर ने गुरु रामसिंह को बाघा पराणां थाने में बुला कर पूछा कि "आपके विरुद्ध विद्रोहात्मक भाषणों का आरोप है। आप इस सम्बन्ध में क्या कहना चाहते हैं?" सद्गुरु जी ने बड़ी शांत मुद्रा में उत्तर दिया :

"मैं सत्य धर्म का प्रचार करता हूं। व्यर्थ और खर्चीली रीति-रस्मों के भार से जनता को मुक्त कराना चाहता हूं। सामाजिक और धार्मिक अवनति के कारण लोगों को जो दुख हो रहे हैं मैं उन्हें दूर करने का प्रयास कर रहा हूं। मेरा किसी से विरोध या द्वेष नहीं है। मैं देश और जाति का हितैषी हूं। यदि ऐसा करने का नाम विद्रोह है तो मैं इसके लिए हर प्रकार का कष्ट सहन करने को सदा तत्पर हूं।"

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

इस निर्भीक उत्तर को सुन कर डिप्टी कमिश्नर कुछ देर शांत रहने के बाद बोला, "अब आपको इस जिले में दीवान करने की अनुमति प्राप्त नहीं होगी।" यह आदेश सुनाने के बाद सद्गुरु जी को हिरासत में ले कर पुलिस के संरक्षण में भैंणी भेजा गया और वहाँ से 28 दिनों तक नित्य पैदल चला कर लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर के सामने उपस्थित किया जाता रहा।

अप्रैल, मई व जून 1863 में पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आदेशानुसार सरकारी कर्मचारी कूका आंदोलन के सम्बन्ध में सूचनाएं भेजते रहे जो अधिकांश कल्पित और अतिशयोक्तिपूर्ण होने के साथ अकसर निर्मूल भी होती थीं। कप्तान मिलर ने 11 जून को जो सूचना भेजी उसका सारांश था, "सदगुरु रामसिंह जी का भेद लेने को गेंदा सिंह को भैंणी भेजा गया। वह वहाँ उस समय पहुंचा जब गुरु जी डेरे से कहीं बाहर गए हुए थे। गेंदा सिंह बाबा साहिब सिंह के पास गया और दीक्षा प्राप्त कर के कूका बनने की प्रार्थना की। बाबाजी ने उसे नाम दिया और वह कूकों में प्रविष्ट हो गया। गेंदा सिंह ने देखा कि रात को ढोल बजने के बाद पचास कूके बाबा साहिब सिंह से लाठियां ले कर दो घंटे तक कवायद करते हैं। इसके बाद उसने सद्गुरु जी के दर्शनों की इच्छा प्रगट की। बाबा साहिब सिंह जी ने उसे अपने दो पत्र दे कर कहा कि सदगुरु जी को इन्हें दे देना। गेंदा सिंह पत्र ले कर जालंधर छावनी पहुंचा और वहां कप्तान मिलर को वे पत्र दे दिए।" उन दो पत्रों में एक पत्र ही मुख्य है जो कल्पित जान पड़ता है। पत्र में लिखा है :

"फतेह। गुरु गोबिंदसिंह जी सहाय। मैं एक बढ़ई के घर जन्म लूंगा और रामसिंह नाम से विख्यात हूंगा। मेरा घर यमुना और सतलुज के मध्य होगा। मैं अपना पंथ प्रगट करूंगा। मैं फिरंगी को पराजित कर अपने शीश पर राज्य-मुकुट धारण कर के शंख ध्वनि करूंगा। गायक मेरे गीत गाएंगे। सन 1864 में सिंहासन पर बैठूंगा। जब मेरे सवा लाख सिंह होंगे तो मैं फिरंगियों के सिर काटूंगा। सवा लाख खालसों की जयकार सुन कर ईसाई देश से भाग जाएंगे। यमुना तट पर भारी संग्राम होगा। लहू रावी के जल के समान वेग से बहेगा। किसी फिरंगी को जीवित न छोड़ा जाएगा। सन 1865 में देश भर में उपद्रव होंगे। खालसा का शासन होगा। राजा और प्रजा सुख और शांति से रहेंगे। दिन प्रति दिन, रामसिंह का राज्य बढ़ता जाएगा। यह अकाल पुरुष ने लिखा है। सन 1865 में समस्त देश पर रामसिंह का राज्य होगा। मेरे सिख अकाल पुरुष की पूजा करेंगे। अकाल पुरुष जी का वाक्य है कि यह सब कुछ हो कर रहेगा।"

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

पंजाब के सरकारी कर्मचारियों ने इसी प्रकार की झूठी और काल्पनिक सूचनाएं भेजीं। अमृतसर के कमिश्नर मेजर फेरिंगटन, डिस्ट्रिक्ट सुपरिंटेण्डेट पुलिस कैप्टेन मेन्जीज ने इस आशय की सूचना भेजी कि 1863 की दीवाली को राम-सिंह जी और उनके कूके अमृतसर में विद्रोह करेंगे। ऐसी सभी सूचनाएं एकत्र कर पंजाब के इंस्पेक्टर जनरल मेजर यंग हज़्बेंड ने एक स्मृतिपत्र पंजाब के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर को दिया। इन सूचनाओं और स्मृतिपत्र के आधार पर सदगुरु जी को भैणी गांव में नजरबंद कर दिया गया। 30 जून 1863 को निकाले गए एक आदेश में कहा गया था कि रामसिंह अमृतसर में कोई सम्मेलन (दीवान) न करें और यदि इस चेतावनी के पश्चात् भी सम्मेलन किया गया और कोई झगड़ा हुआ तो शांति-भंग के अपराध में उन पर मुकदमा चलाया जाएगा। अंत में लिखा गया था कि रामसिंह को हिदायत दी जाती है वह अपने गांव में ही रहें। पुलिस उन पर निगरानी रखेगी और उनकी सरगर्मियों की सूचना देगी।

6 जुलाई, 1863 को सद्गुरु रामसिंह को लुधियाना बुला कर यह आदेश सुनाया गया। उसी दिन से उनकी निगरानी के लिए पुलिस तथा गुप्तचर नियुक्त किए गए। सद्गुरु पर यह प्रतिबंध था कि वह बड़े सम्मेलनों, मेलों और दीवानों में बिना सरकारी अनुमति के नहीं जा सकते थे। परन्तु वह 1866 में होला-महला के त्योहार के अवसर पर, जो होली के दिनों में खोटा गांव (जिला फिरोजपुर) में हुआ करता था, बिना सरकारी आज्ञा प्राप्त किए चले गए। सरकार ने इस पर कोई कार्यवाही तो नहीं की परन्तु यह बात सरकार को बहुत आपत्तिजनक लगी। अगले वर्ष, 1867 में, होली के त्योहार पर सद्गुरु ने सरकारी आज्ञा प्राप्त करने के लिए सूबा लक्खा सिंह को लाहौर भेजा परन्तु आज्ञा नहीं मिली। इस पर सद्गुरु ने घोषणा कर दी कि सरकार से आनंदपुर जाने की यदि हमें आज्ञा न भी प्राप्त हुई तो भी हम वहां पहुंचेंगे। इस घोषणा पर सरकार ने मौन रह कर सद्गुरु को जाने दिया और उन पर देख-रेख रखने को मैक ऐण्ड्रज (डी०आई० जी० पुलिस) को लाहौर से आनंदपुर भेजा। वह 17 मार्च, 1867 पुलिस कर्मचारियों की एक बड़ी टुकड़ी के साथ आनंदपुर पहुंचा। अगले दिन मेजर परकिस, डिप्टी कमिश्नर होशियारपुर, भी वहां पहुंच गए। इस अवसर के कई विवरण सरकारी सूचनाओं से प्राप्त होते हैं। इन्सपेक्टर फ़जल हुसेन की मार्च, 1867 की रिपोर्ट से पता चलता है कि आनंदपुर के मेले में दो दिन में 50 सिख कूके बने। गुरु रामसिंह के साथ, अपने और सूबों की सवारी के लिए, 40 घोड़े थे। उनके जलूस में नगारे बजते थे, ध्वजा फहराती थी। उनके साथ लगभग 8 हज़ार कूके थे।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

इसके वाद सद्गुरु रामसिंह जी विना सरकारी आज्ञा के ही 25 अक्तूवर, 1867 को दीपावली के अवसर पर अमृतसर पहुंच गए। आनंदपुर के समान ही सरकार ने यहाँ के कार्यक्रम में भी कोई हस्तक्षेप नहीं किया। इस अवसर पर 20 हजार कूके जमा हुए। सारा कार्यक्रम वड़ी सज-धज और उत्साह से हुआ। 27 और 28 अक्तूवर को भी सद्गुरु जी ने धूम-धाम से दरवार साहिव पहुंच कर हजारों की संख्या में भक्तों के साथ भेंट चढ़ाई। इस समय दो हजार व्यक्ति कूके वने।

प्रत्यक्ष रूप से सरकार ने कूका कार्यक्रम में कोई वाधा नहीं डाली परन्तु सरकार सदगुरु जी की वढ़ती हुई शक्ति से शंकित अवश्य थी। सरकार कूका कार्यक्रम का मुख्य मंतव्य पंजाव में पंजावी सरकार की स्थापना समझती थी। सरकारी दृष्टिकोण से प्रत्येक कूका विद्रोही था और सद्गुरु लाखों विद्रोहियों के अद्वितीय नेता थे।

सितम्वर, 1866 में ही पंजाव सरकार को एक रिपोर्ट में अम्वाला के कमिश्नर, कर्नल आर० जी० टेलर ने लिखा था, "यह मेरा निश्चित मत है कि कूका आंदोलन का उद्देश्य अंग्रेजों से लड़ना है। सरकार को इसे चेतावनी के रूप में जानना चाहिए।" दो साल वाद डोनोवन नामक एक अंग्रेज ने सरकार को लिखा था, "देश में एक भीषण कुचक्र चल रहा है और गुरु रामसिंह ने हमारे विरुद्ध दो लाख लोगों को विद्रोह करने और अन्त में हमें पंजाव से वाहर निकालने के लिए एकत्रित कर लिया है। अगले वर्ष के आरम्भ में किसी भयानक उथल-पुथल की आशंका है। कूकों की शक्ति दिन प्रति दिन वढ़ती जा रही है। सभी सिख सरदार इसमें सम्मिलित होते जा रहे हैं। सारे भारत में विद्रोह की गूंज है। इसलिए हमारी सरकार को उदारता से काम नहीं लेना चाहिए।"

1867 तक कूका आंदोलन शांतिमय रूप से चलता रहा। सद्गुरु रामसिंह ने भ्रमण कर हर स्थान पर अपने मत का प्रचार किया और अपने संगठन को सुदृढ़ तथा विस्तृत वनाया। इसी वीच कूके प्रायः सभी सिख रियासतों और नेपाल की सेना में भी भर्ती हुए। गुरु रामसिंह पर प्रतिवंध होते हुए भी वह सरकारी आज्ञा की अवज्ञा कर एक वार खोटा गए और उन्होंने होली के अवसर पर वड़े-वड़े सम्मेलनों में भाग लिया। एक वार दीपावली पर अमृतसर गए। 1867 में माघ मेले के अवसर पर अमृतसर गए। उनके साथ 2000 अनुयायी भी थे। वाह्य आडम्वर कम होने के कारण सरकार का संदेह दूर हो गया और 1869 में गुरु रामसिंह पर लगे सव प्रतिवंध हटा लिए गए।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

अमृतसर हत्याकाण्ड और फाँसी के तख्ते पर

भारत सदा से कृषि-प्रधान देश रहा है। यहाँ गाय को माता मान कर पूजा जाता रहा है। महाराजा रणजीतसिंह के राज्य में तो गो-वध सर्वथा वर्जित था, यहां तक कि सेना में भर्ती होने वाले विदेशी भी गो-मांस नहीं खाते थे। शाह शुजाउल-मुल्क और अंग्रेजों ने यह लिखित वचन दिया था कि जब उनकी सेनाएं पंजाब से होकर निकलेंगी तो वह गो-वध न करेंगी।

महाराजा रणजीतसिंह के बाद जब महाराजा दलीपसिंह के नाम से कौंसिल आफ रीजेंसी राज्य करती थी तो सर्वप्रथम रेजीडेण्ट सर जान लारेंस के हस्ताक्षर से ताम्रपत्र पर यह आदेश श्री दरबार साहिब अमृतसर के द्वार पर लटकाया गया था कि अमृतसर में गो-वध नहीं होगा।

मार्च 1849 के अन्त में जब पंजाब में अंग्रेजी राज्य हो गया तो सरकार ने पहला कदम यह उठाया कि बूचड़खाने खोलने के आदेश जारी किए। गवर्नर जनरल ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की आज्ञानुसार 5 मई, 1849 को यह घोषणा की: "अब से किसी को भी अपने कार्यों द्वारा अपने पड़ोसियों के रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप करने की आज्ञा न होगी।" इसके बाद पंजाब के नगरों में बूचड़खाने खोलने और गोमांस बेचने की छूट हो गई। यह आदेश देने में अंग्रेजों की यह भावना भी थी कि वह पंजाब के शासक हो गए हैं और उन पर विदेशी होने के कारण ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं कि वह गो-वध न कर सकें। इसमें गहरी कुटिल नीति भी निहित थी कि हिन्दू-मुसलमानों में फूट डालने के लिए गोवध का प्रचार किया जाए। अंग्रेजी सरकार की हमेशा यह नीति रही, फूट डालो और राज्य करो। सबसे पहले गुरु की

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

नगरी अमृतसर में ही सरकारी आदेश पर अमल किया गया और लाहौरी दरवाजे के बाहर एक बूचड़खाना खोला गया। इससे नगर में घोर असंतोष फैल गया। हिन्दू और सिखों ने इसके विरोध में आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। गो-हत्या और सड़कों पर गोमांस बेचने के कारण कई बार हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए, मुकद्मे चले। अधिकारियों को यह पता चल गया कि बूचड़खाने चालू करने से जनता अत्यधिक असन्तुष्ट है।

यह वह समय था जब गुरु रामसिंह पर से सब प्रकार के प्रतिबन्ध हट चुके थे। कूकों में नए उत्साह की लहर दौड़ रही थी। वास्तव में कूका आन्दोलन अपनी युवावस्था में था। सद्गुरु रामसिंह और उनके सूबे देश को पराधीनता से मुक्त करने को व्याकुल हो उठे। प्राणों की बाजी लगाकर वे कार्यक्षेत्र में उतर आए। सरकार भी इस आंदोलन को कुचलने के लिए हर प्रकार से कटिबद्ध थी। बूचड़खाने खोलने के सरकारी आदेश को कूका वीरों ने एक ऐसा नश्तर समझा जिससे सरकार यह जानने का प्रयत्न कर रही थी कि सिख शरीर में अभी स्वाभिमान का रक्त शेष है या नहीं। कूका वीरों का एक छोटा सा जत्था जिसमें लगभग 20 व्यक्ति थे अपना जीवन उत्सर्ग करने की भावना से पंजाब के नगरों में बूचड़खाने बन्द कराने के लिए गुरुनगरी अमृतसर की ओर चल पड़ा। यह जत्था लाहौरी दरवाजे वाले बूचड़खाने से होता हुआ घण्टाघर वाले मैदान के बूचड़खाने पर पहुंचा। इससे काफी उत्तेजना रही। 14 जून, 1871 की आधी रात को इन लोगों ने दरबार साहिब के निकट वाले बूचड़खाने पर धावा बोल दिया। वहां बंधी गउओं को मुक्त कर बूचड़ों का सर धड़ से अलग कर सीधे भैंणी की ओर चल दिए। इधर अमृतसर में सभी प्रतिष्ठित हिन्दू पकड़े गए। उन्हें असह्य यातनाएं देकर विवश किया गया कि निर्दोष होते हुए भी वह स्वयं को अपराधी स्वीकार करें। इस प्रकार विवशता से अपराध स्वीकार करने वाले निर्दोष व्यक्तियों को मृत्युदण्ड देकर अंग्रेजी न्याय का मिथ्या नाटक समाप्त हुआ।

उधर वे वीर कूके जिन्होंने आवेश में आकर गो-हत्यारों का वध किया था भैंणी पहुंच कर सद्गुरु के सामने हाजिर हुए। गुरु जी ने पूछा कि अमृतसर हत्या काण्ड के मुकदमे का क्या परिणाम हुआ? उत्तर मिला, उन्हें मृत्युदण्ड की आज्ञा हुई। साथ ही इन कूके वीरों ने स्वीकार किया कि "यह हत्याएं तो हमने की थीं।" इस पर गुरु जी ने आदेश दिया कि "सिखो, अपराध किसी का और फल कोई और भोगे, यह अनुचित है। तुरन्त अमृतसर पहुंच कर उन निर्दोषों को मुक्त कराओ

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

और अपने कर्म का फल स्वयं भोगो।" उन्होंने अमृतसर पहुंचकर पुलिस को आत्मसमर्पण कर दिया। पुलिस ने दण्डित निहंगों को मुक्त कर इन वीर कूकों को अदालत में पेश किया। 31 अगस्त, 1871 को इनमें से 4 को मृत्युदण्ड और 3 को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। अमृतसर के प्रत्येक नर-नारी की जिह्वा पर इन वीर कूकों की चर्चा थी। अपराध स्वीकार कर निर्दोषों को काल के गाल से छुड़ाकर अपना बलिदान करना कोई साधारण बात नहीं थी।

15 सितम्बर, 1871 इन वीरों के मृत्यु-आलिंगन का दिवस था। उस दिन प्रातः अमृतसर के सरोवर में स्नान कर, कड़ाह प्रसाद ले, ढोलक-मंजीरों के साथ प्रेमावेश में झूमझूम कर कीर्तन करते ये देशभक्त अपार जनसमुदाय के साथ मजीठा रोड के किनारे एक वट वृक्ष पर, जहाँ अब विक्टोरिया जुबली अस्पताल है, फाँसी पर लटकने पहुँच गए। ताँत की डोरी के स्थान पर रेशम की रस्सियाँ मँगाई गईं जिन्हें गले में बांधकर ये वीर सहर्ष शहीद हो गए। चारों ओर से यही नाद सुन पड़ा: "वतन से प्यार करने वाले शहीद होकर ही जीवन सफल करते हैं।" इन शहीदों में से एक अपनी माँ का इकलौता बेटा था। फाँसी के पहले माँ ने अपने पुत्र तथा अन्य तीन कूकों का तिलक और ग्रंथसाहब का पाठ किया और कहा, "मैं धन्य हूँ कि मेरे लड़के ने गाय और देश के लिए अपना बलिदान किया है।" देश पर इस अनुपम बलिदान का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी स्तुति में मुक्त कण्ठ से यह स्वर गूंज उठा :

"जननी जने तो भक्तजन, कै दाता, कै सूर।
नहीं तो जननी बांझ रहे, काहि गँवावे नूर।"

अमृतसर के बूचड़ हत्याकांड के 20-25 दिन बाद कूकों का एक जत्था भैणी जाते हुए लुधियाना से 25 मील दूर रायकोट कस्बे से निकला। उसे पता चला कि गुरुद्वारे के निकट वहाँ बूचड़खाना है जिसमें नित्य गोवध होता है। उन्होंने निश्चय किया कि गोरक्षा और गुरुद्वारे की पवित्रता के लिये बूचड़ों का सफाया कर डाला जाए। इस निर्णय के अनुसार नाभा राज्य के सन्त मंगलसिंह, संत गुरुमुखसिंह और संत निहालसिंह ने 15 जुलाई को रात के 11 बजे रायकोट के बूचड़ों पर धावा बोल दिया और उन्हें मारकर साफ बच कर निकल गए। पुलिस ने इन तीनों अपराधियों तथा निर्दोष सूबे ज्ञानसिंह और रतनसिंह को भी गिरफ्तार कर इन पांचों पर मुकद्दमा चलाया। पहले तीन को हत्या के अपराध में 5 अगस्त, 1871 को फांसी

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

दी गई। सूबा ज्ञानसिंह और रतनसिंह को, निर्दोष होते हुए भी, 26 नवम्बर, 1871 को लुधियाना में फांसी दी गई। कूकों में अदम्य उत्साह और देश पर मर मिटने की भावना दिनों-दिन बढ़ रही थी। दूसरी ओर सरकार ने सशंकित होकर तेजी से दमनचक्र चलाया। सरकार गुरु रामसिंह के बढ़ते हुए प्रभाव और कूकों के उत्साह से बौखला उठी। 1871 में सरकार ने कूकों और उनके गुरु को दण्ड देने का दृढ़ निश्चय किया। साथ ही राजा शिवराजसिंह काशीपुर ने कूका आन्दोलन पर यह रिपोर्ट सरकार को दी कि गुरु रामसिंह का तांतिया टोपे के अनुज से निकट सम्पर्क है और कुंवरसिंह का एक निकटस्थ सम्बन्धी विद्रोह खड़ा करने की योजना बना रहा है। स्थिति यह हो गई थी कि जरा सी चिंगारी लगने पर भयंकर मुठभेड़ हो सकती थी।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

मालेरकोटला का बीभत्स नरवध

मालेरकोटला पंजाब के लुधियाना जिले में एक मुस्लिम रियासत थी। इसके नवाब मर चुके थे और उनका अल्पवयस्क पुत्र गद्दी पर आसीन था। राज्य में पुलिस मनमानी करती थी और न्याय का शासन ढीला और अनियंत्रित था। भीतर ही भीतर हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य भड़काने का भी प्रयास था। अंग्रेजों को पटियाला, नाभा और जींद के महाराजाओं का समर्थन प्राप्त था। कूकों का संगठन अभी प्रारम्भिक अवस्था में ही था। वह इतना सुदृढ़ नहीं बन पाया था कि इन सब विरोधी शक्तियों से खुलकर सशस्त्र संघर्ष कर विजयी हो सके। गुरु रामसिंह जी को तो इस का पूरा ज्ञान था परन्तु उनके अनुयायी नूत्रों में कुछ उतावलापन था।

भैणी ग्राम में 11 जनवरी, 1872 से 13 जनवरी तक एक वृहत् मेला लगा जिसमें हजारों कूकों ने भाग लिया। दूर-दूर से कूके उसमें भाग लेने आए थे। 11 जनवरी को लोहड़ी का त्योहार था और 12 जनवरी को माघ की संक्रांति। 13 जनवरी को माघी मेले के समय मालेरकोटला राज्य के फरवाही ग्राम का नंबरदार गुरुमुखसिंह सरकारी लगान अदा करने कोटला जा रहा था। मार्ग में उसने एक मुसलमान को बैल पर शलजम लादे और स्वयं भी उसी पर सवार आते देखा। गुरुमुख, जो कूका था, को यह देखकर गरीब बैल पर दया आई और उसने उस मुसलमान से बैल पर दया करने की विनयपूर्वक प्रार्थना की। इस पर उसने गुरुमुखसिंह को अपशब्द कहे और शोर मचा कर अन्य लोगों को भी वहां जमा कर लिया। लोग उस कूके वीर को पकड़ कर कोटला कोतवाली में ले गए। वहां के मुसलमान कोतवाल ने यह निर्णय दिया कि वह बैल उस कूके सिख के सामने ही जिबह करा दिया जाए। उसी समय बैल को गिरा कर हलाल कर दिया गया। असहाय गुरुमुखसिंह को खूब पीटने के बाद कोतवाली से बाहर निकाल दिया गया। वह वहां से दुखी

होकर सीधा भैणी पहुंच कर भरे दीवान में गया और अपनी दुःखद कथा कह सुनाई। इससे लोगों में उत्तेजना बढ़ी।

भैणी में, जहां एकांत में सद्गुरु रामसिंह भजन किया करते थे, सरदार हीरासिंह व सरदार लहनासिंह के नेतृत्व में कुछ सिख कूकों ने मालेरकोटला में गो-वंश की हत्या और निर्दोष सूबे ज्ञानसिंह और रतनसिंह को फांसी दिए जाने पर विचार किया। उन्होंने निर्णय किया कि गो-रक्षा और गुरमुखसिंह के अपमान का बदला लेने के लिए मालेरकोटला पर भयंकर धावा बोला जाए और इसके लिए मलोध के सरदार से अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किए जाएं। दो वीरांगनाओं ने ध्वजा फहराते हुए आह्वान किया कि "वीरो अपने कर्त्तव्यपालन के लिए, अपने शीश न्योछावर करने को तैयार हो, उठो।" साथ ही उत्साहित कूकों ने गुरु रामसिंह से आग्रह किया कि जिस विप्लव की योजना इतने दिनों से बनाई जा रही है उसे आज ही आरम्भ कर देना चाहिए। परन्तु पर्याप्त तैयारी न होने के कारण गुरु जी उनसे सहमत नहीं हुए। गुरु जी ने सबसे अपने-अपने घर लौट जाने को कहा और लोगों से शान्त रहने की विनयपूर्वक प्रार्थना की। बहुत से लोग शान्त हो गए। परन्तु लगभग 150 व्यक्तियों ने प्रतिहिंसा की भावना से विद्रोह खड़ा करने की घोषणा कर दी। इस पर गुरु जी ने संगठन को बचाने और पूरी तैयारी से विप्लव करने के विचार से 13 जनवरी, 1872 को दिन के दो बजे वहां तैनात पुलिस अधिकारी से कहा कि मस्ताने उनके नियन्त्रण से बाहर हो गए हैं। गुरु जी ने सरदार हीरासिंह और सरदार लहनासिंह को इस समूह का नेता बताया। जब पुलिस अधिकारी ने गुरु जी की इस सूचना पर कोई ध्यान नहीं दिया, तो गुरु जी ने बाबा लक्खासिंह को लुधियाना पहुंचकर इस स्थिति की सूचना डिप्टी कमिश्नर को देने के लिए भेजा। बाबा लक्खासिंह ने लुधियाना पहुंच कर डिप्टी कमिश्नर से सब बातें कहीं। इसका परिणाम सिर्फ यह हुआ कि बाबा लक्खासिंह को उसी समय गिरफ्तार कर लिया गया।

इधर कूकादल ने सरदार हीरासिंह और लहनासिंह के नेतृत्व में 14 जनवरी को संध्या 7 बजे मलोध के किले पर चढ़ाई कर दी। कूकों की संख्या 200 थी। दुर्ग के सरदार बदनसिंह ने जब एक बार गुरु से सेवा का आदेश मांगा था तो गुरु ने कहा था कि समय आने पर सेवा बता दी जाएगी। इस वचन का स्मरण करा कर उनसे शस्त्र और घोड़े आदि देने का आग्रह किया गया। परन्तु विद्रोह को अपरिपक्व जानकर सरदार को साथ देने का साहस न हुआ। ऐसी दशा में कूकों ने

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

अपना प्रयोजन सिद्ध करने का बलपूर्वक प्रयास किया। सरकारी पत्रों के अनुसार इस आक्रमण का एक कारण यह भी था कि सरदार बदनसिंह महाराजा पटियाला के निकट सम्बन्धी थे। महाराजा ने बूचड़ हत्याकांड में सरकार की सहायता की थी। हो सकता है उसका बदला लेना भी आक्रमण का लक्ष्य रहा हो। इस आक्रमण में सरदार बदनसिंह घायल हुए, दो हत्याएं हुईं और कूके दो-तीन घोड़े ले गए। कूकों में से एक या दो की हत्या हुई।

डिप्टी कमिश्नर ने पटियाला और मालेरकोटला राज्यों के वकीलों को बुला कर चेतावनी दे दी थी कि कूके उनके राज्यों पर आक्रमण कर रहे हैं। साथ ही जिला पुलिस सुपरिटेंण्डेण्ट को भी सूचना दी कि डिप्टी इन्सपेक्टर पुलिस ने कूकों की टोली का न तो पीछा किया और न उन पर देखरेख रखी।

मलौध की घटना के बाद लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर ने महाराजा पटियाला को चिट्ठी और तार से सूचना दी कि कूकों के नेता हीरासिंह और लहनासिंह को गिरफ्तार किया जाए। वह स्वयं भी इस घटना की जांच करने के लिए मलौध रवाना हो गए। इसके अतिरिक्त गुरु रामसिंह और उनके प्रमुख सूबों को उपरोक्त काण्ड में भाग लेने वालों का पता लगाने के लिए मलौध बुला भेजा।

लुधियाना के नायब तहसीलदार ने लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर को सूचना दी कि लहनासिंह और हीरासिंह खुला ऐलान कर रहे हैं कि वह पहले कोटला फिर संगरूर या जींद जाएंगे और बाद में दिल्ली। उनके साथ लगभग 300 कूके हैं।

मलौध से मालेरकोटला नौ मील है। मलौध से चलकर वीर कूके कोटला से लगभग डेढ़ मील की दूरी पर एक पुराने बाग में रात को ठहरे और 15 जनवरी, 1872 को प्रातः 7 बजे मालेरकोटला राज्य की राजधानी कोटला नगर में घुसे। वह नवाब मालेरकोटला के महल की ओर बढ़ रहे थे। पास ही सरकारी खजाना था। मार्ग में उन्होंने चिड़ीमार मोहल्ले पर आक्रमण किया जहां गो-हत्यारे पर्याप्त संख्या में थे।

राज्य के अधिकारियों को 14 जनवरी की रात को ही कूकों के आने की सूचना प्राप्त हो चुकी थी। वह पूरी तरह तैयार थे। उन्हें पड़ोसी राज्यों से भी पुलिस और सेना की सहायता प्राप्त हो चुकी थी। कूका-आक्रमण की सूचना पाते ही पुलिस और सेना कूका सिंहों के सम्मुख आ डटी। पुलिस और सेना की संख्या

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

कूकों से नौ-दस गुनी थी। अपने सिर पर कफन बांधे कूकों ने घमासान युद्ध किया। उन्होंने केवल लाठियों और बरछों से ही सशस्त्र शत्रुदल में भगदड़ मचा दी। ज़रा अवकाश मिलते ही कूका वीरों ने अपने घायल साथियों की सुधि ली। परन्तु सेना और पुलिस ने पुनः आक्रमण किया और मुंह की खाई। तीसरी बार राज्य के सैनिक दृढ़ता से संगठित होकर कूका वीरों पर टूट पड़े परन्तु कूकों ने उनके दांत ऐसे खट्टे किए कि उन्होंने फिर आक्रमण करने का साहस ही नहीं किया। सिविल सर्जन, लुधियाना की 15 जनवरी, 1872 की रिपोर्ट के अनुसार 7 कूके शहीद हुए और 29 घायलों को वह उठा कर ले गए। विरुद्ध पक्ष के 8 मरे, 4 से अधिक घायल हुए और 9 के साधारण चोटें आई। मरने वालों में वह कोतवाल भी था जिसने गुरुमुखसिंह के सामने बैल का वध किया था।

जब कूका वीरों ने देखा कि उनके सम्मुख कोई नहीं रहा तो वह अपने साथियों को उठाकर कोटला से बाहर निकल कर पटियाला राज्य की ओर चल पड़े। वह कोटला से चले ही थे कि मालेरकोटला के एक पठान योद्धा समुदखां ने अपने कुछ साथियों को लेकर उनका पीछा किया। कोटला से 7-8 मील दूर भूतन-वाले टीले के पास पहुंच कर उसने अपने घोड़े पर से ललकारा, "सिंहो! खड़े हो जाओ। कहाँ है हीरा सिंह?" सरदार हीरासिंह ने घोड़े पर से समुदखां को ललकार कर कहा, "सावधान हो जा, पठान! फिर न कहना पता न चला। प्रथम तू ही प्रहार कर ले।" सुनते ही पठान ने सरदार के सर पर फुरती से तलवार का प्रहार किया। सरदार ने ढाल न होने के कारण अपना बायां हाथ रक्षार्थ उठा दिया जिससे सर तो बच गया पर कलाई कट गयी। पर सरदार ने जब वार किया तो पठान का सर धड़ से कट कर पृथ्वी पर जा पड़ा।

कूका वीरों ने सरदार हीरासिंह के नेतृत्व में पटियाला राज्य के निकट रड़ ग्राम में डेरा डाल दिया। यह स्थान कोटला से लगभग दो-तीन मील था। कोटला से सरकारी अधिकारियों ने शेरपुर के तहसीलदार को तुरन्त सूचना भेज दी थी। शेरपुर पटियाला राज्य में ही रड़ से कुछ मील पर है। वहां कुछ समय बाद शेरपुर का थानेदार उत्तमसिंह नामधारी वेश में उनके पास आया और बड़ी नम्रता से भोजन के लिये आमन्त्रित किया। उसके कपट को समझकर भी सरदार हीरासिंह ने उसका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। थानेदार उन्हें अपने घर ले गया और वहां उन्हें गिरफ्तार करा दिया। पटियाला राज्य के नायब नाज़िम नियाज अली ने इन 68 वीरों को अमरगढ़ के किले में बन्द कर दिया। सरकारी सूचना के अनुसार इनमें

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

से 29 घायल थे। लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर कोवन ने 17 जनवरी, 1872 को कोटला से पंजाब के गृह सचिव को दिल्ली तार भेजा कि "शांति स्थापित हो गई। लगभग 100 कूके मारे गए, घायल हुए या पकड़े गए। पटियाला, नाभा और जींद पूरी सहायता दे रहे हैं।" कोवन ने ही लुधियाना से अम्वाला के कमिश्नर को तार द्वारा सूचित कर दिया था कि "400 कूकों ने मालेरकोटला पर आक्रमण कर दिया, आठ या दस मारे गए। सेना शीघ्र भेजिए।" यह तार देने के बाद कोवन स्वयं 16 जनवरी को कोटला पहुंच गया था। उसी दिन नायब नाजिम गिरफ्तार किए 68 कूकों को लेकर मालेरकोटला पहुंच गया। वहाँ रियासतों की सेनाएं, रिसाले और तोपखाने थे। जालन्धर, दिल्ली तथा अम्बाला से आने वाली सेनाओं की प्रतीक्षा थी।

17 जनवरी, 1872 को कूका देशभक्त वीरों को मालेरकोटला के जमालपुर गांव के समीप एक रक्कड़ पर ले जाया गया जो आज तक 'कूकों का रक्कड़' कहलाता है। वहाँ एक ओर कतार में कूकों को खड़ा किया गया और दूसरी ओर रिसाले, फौजें और उनके अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित सरदार खड़े थे।

कोवन की आज्ञानुसार अम्वाला डिवीजन की सात तोपें वहाँ लगा दी गईं। इससे पहले 17 जनवरी को कमिश्नर फोरसाइथ ने लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर कोवन को एक अर्ध-सरकारी पत्र लिखा था जिसका आशय था : "जिन अपराधियों को कोटला राज्य में पकड़ा गया है उनको विना चीफ कोर्ट भेजे कानून द्वारा फाँसी दी जा सकती है। मैं नियम के अनुसार और जल्दी कार्यवाही पूरी कराने शीघ्र ही कोटला आ रहा हूँ।" इसके वाद फिर फोरसाइथ ने कोवन को सूचित किया कि "मैं विनय करता हूँ कि आप तुरन्त उन सवके विरुद्ध, जो मृत्यु दण्ड के योग्य हों, मुकदमे तैयार करें। मैं उन पर बिना विलम्व आदेश दूंगा। यह मामला इस सीमा तक आवश्यक नहीं है कि साधारण निर्धारित नियमों का उल्लंघन किया जाए। आपने इस काम में जल्दी करने की जो इच्छा प्रकट की है उसके कारण मैं बहुत शीघ्र मालेरकोटला जा रहा हूँ।" इसके उत्तर में डिप्टी कमिश्नर ने 17 जनवरी को अम्वाला के कमिश्नर को लिखा कि "आपके लिए कोटला आना आवश्यक नहीं। मैं जो कुछ हुआ उसका वर्णन लिखता हूँ।" उसने मलोध और कोटला की घटनाओं का पूरा हाल देने के बाद अन्त में लिखा : "मैं वन्दियों के आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मेरा विचार है कि मलोध और कोटला के आक्रमणों में जिन्होंने भाग लिया उन सबको मृत्यु के घाट उतार दूं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि पंजाब सरकार उन

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

बंदियों को जो अपराध करते हुए पकड़े गए हैं तुरन्त मृत्यु दण्ड दिए जाने का समर्थन करेगी।"

इसके बाद कोवन ने अम्बाला के कमिश्नर को 17 जनवरी के अपने पत्र में लिखा : "68 विद्रोही कूके आज रड़ से लाए गए। इनमें दो स्त्रियां और 66 पुरुष हैं। 22 घायल हैं जिनमें अधिकांश को मामूली चोटें हैं।

"इन बन्दियों का व्यवहार असंयत और उद्दण्डतापूर्ण था। वे सरकार और देशी रजवाड़ों को बहुत बुरी गालियां दे रहे थे। उन सबों ने स्वीकार किया कि वे मलौध और कोटला के आक्रमणों में उपस्थित थे और अपने कार्य की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि हमने हथियार-प्राप्ति के लिए मलौध पर हमला किया और कोटला पर गो-हत्यारों का वध करने के लिए।

"दो स्त्रियां पटियाला की थीं। उन्हें मैंने पटियाला के सेनाध्यक्ष को पटियाला भेजने के लिए दे दिया। 49 विद्रोहियों को तोपों से उड़वा दिया। आज ही दोपहर बाद कोटला महाराज के परेड मैदान में पटियाला, नाभा, जींद और कोटला की सेनाओं के समक्ष यह सब हुआ। मेरा विचार था कि 50 को तोप से उड़वा दूं और शेष 16 विद्रोहियों को कल मलौध में फांसी दे दूं परन्तु एक ने रक्षकों के पंजे से छूटकर मेरे ऊपर भयंकर प्रहार किया। उसने मेरी दाढ़ी पकड़कर मुझे गला दबाकर जान से मारना चाहा। वह बहुत शक्तिशाली व्यक्ति था। उससे छुटकारा पाने में बड़ी कठिनाई हुई। उसके बाद उसने कुछ देशी अधिकारियों पर आक्रमण किया जो मेरे निकट खड़े थे। इन अधिकारियों ने तलवार से उसके टुकड़े कर दिए।

"जिन विद्रोहियों को तोप से उड़ाया गया उनमें हीरासिंह और लहनासिंह थे।"

उपरोक्त वर्णन मि० कोवन का है। स्वतन्त्र सूत्रों का वर्णन इससे कुछ भिन्न है। उनके अनुसार पटियाला, नाभा व जींद की ओर से कूकों [illegible] देने के लिए 9 तोपें भेजी गई थीं। कोवन की आज्ञानुसार इनमें से 7 [illegible] लगा दी गईं। कोवन ने उनको तोपों से उड़ा देने का आदेश दिया जो उसकी [illegible] सीमा से बाहर था और कमिश्नर अम्बाला की आज्ञा का भी उल्लंघन [illegible] कूके तोपों को देख कर मुस्करा रहे थे। सहस्रों की संख्या में दर्शक [illegible] साहस और वीरता से आश्चर्यचकित थे। कोवन अपनी पत्नी सहित [illegible]

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

दो स्त्रियाँ भी, माता इन्दुकौर और खेमकौर, जिन्हें कोवन ने बिना दण्ड दिए पटियाला के सेनाध्यक्ष को सौंप दिया था, इस अद्भुत बलिदान की साक्षी थीं। उन्होंने बताया कि कूका वीरों ने तोपों के मुंह पर बांधे जाने से इन्कार कर दिया और वे उमंग से एक दूसरे से आगे बढ़ कर तोपों के मुंह के सामने जाकर खड़े होते थे। वे ये शब्द कहते :

सूरा सो पहचानिए जो लड़े दीन के हेत ।
पुरजा-पुरजा कट मरे कबहुं न छाड़े खेत ॥
जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द ।
मरने ही तै पाइये पूरण परमानन्द ॥

उनको आदेश था कि तोप की ओर पीठ करके खड़े हों। परन्तु उन्होंने यह गर्जना कर इस आदेश का पालन करने से इंकार कर दिया कि "शूरवीर पीठ में नहीं किन्तु छाती पर वार सहकर प्रसन्न होते हैं। मृत्यु को पीठ दिखाना कायरता है।"

कोवन ने सात मस्तानों को तोप के सामने खड़ा होने का आदेश दिया। प्रथम जत्थे में सरदार हीरासिंह और लहनासिंह भी थे। तोपची ने फायर किया और मस्ताने सिंहों के भौतिक शरीर क्षण भर में छिन्न-भिन्न हो गए। इस प्रकार सात बार में 49 वीर सिंह शहीद हो गए। अन्तिम बारी माता खेमकौर के इकलौते 12 वर्षीय लाल, पचासवें वीर, बिशनसिंह की आई। इसकी भोली-भाली सूरत और बाल्यावस्था देख कर कोवन की पत्नी ने अपने पति से उसे क्षमा करने का आग्रह किया। कोवन ने कहा, "इसको क्षमा किया जा सकता है यदि यह कह दे कि यह रामसिंह का शिष्य नहीं है।" यह सुनते ही बालक आवेश में आकर उछला और उसने झपटकर कोवन की दाढ़ी पकड़ ली और तब तक नहीं छोड़ी जब तक कि पास खड़े अधिकारियों ने अपनी तलवारों से उस बालक के टुकड़े-टुकड़े न कर डाले।

इस घटना में कोवन ने शीघ्रता से मनमानी की और कमिश्नर के आदेश की अवहेलना की। इसके प्रमाण में कमिश्नर फोरसाइथ का पत्र और उसकी हस्त-लिखित आत्मकथा का सम्बद्ध अंश उद्धृत किए जाते हैं : पत्र में लिखा था, "मैं स्वयं घटनास्थल पर पहुंच रहा हूं। मेरे आने से पूर्व किसी विद्रोही को मृत्युदण्ड न देना किन्तु उनका मुकदमा बनाना।" यह आदेश कोवन को उस समय प्राप्त हुआ जब अन्तिम जत्था तोपों के सामने खड़ा था। कोवन ने पत्र को पढ़ कर जेब में डाल

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

लिया और तोपों के सामने खड़े सात व्यक्तियों के अन्तिम जत्थे को भी उपरोक्त आदेश की अवहेलना करते हुए तोपों से उड़वा दिया।

जब फोरसाइथ को यह सूचना प्राप्त हुई कि कोवन ने उसके आदेश के विपरीत वीर कूकों को तोप से उड़वा दिया तो उसने परिस्थिति को देखते हुए विवश हो कोवन के इस बर्बर कार्य का समर्थन किया। फोरसाइथ ने अपनी आत्मकथा में लिखा : "मैंने लुधियाना से लिखित आदेश भेजा था कि जब तक मैं न आऊँ, वह विद्रोहियों का मुकदमा ही देखें, उन्हें मृत्युदण्ड न दें। किन्तु कोवन ने निरंकुश कार्य किया और मेरे पत्र को अपनी जेब में डालकर उसे कार्यरूप में लागू करने से इंकार करते हुए अभियुक्तों को मौत के घाट उतार दिया। जब मैंने यह सुना तो मैं चिन्तित हो उठा और किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया कि यदि मैं उसके कार्य का विरोध करता हूँ तो उससे यह प्रकट होता है कि अफसरों में मतभेद है जिससे इस देश के लोग लाभ उठा सकेंगे। अतएव मैंने यह निर्णय किया कि कोवन के कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लूं। मैंने एक पत्र लेकर उनकी कार्यवाही का समर्थन किया।"

इस प्रकार 50 कूका वीरों का अन्यायपूर्ण और अमानुषिक वध कर मालेरकोटला के शेष 16 कूका वीरों पर अगले दिन, 18 जनवरी, 1872 को, मालेरकोटला में कोवन ने मुकदमा चलाने का स्वाँग रचा। मालेरकोटला राज्य की ओर से 16 कूका वीरों पर 15 जनवरी की प्रातः डकैती और हत्या के अपराध में मुकदमा चला कर न्याजअली, पंजाबसिंह और नरायनसिंह के बयान लिए गए। अभियुक्तों ने उनसे कोई प्रश्न नहीं किए। 16 अभियुक्तों के बयान कोवन ने लिखे परन्तु मिसल में नहीं रखे। कोवन ने अपने आदेश में सभी अभियुक्तों के बयानों को अपराध की स्वीकृति माना तथा उनको अपराधी घोषित कर प्राणदण्ड दिया और मुकदमा कमिश्नर और कोटला राज्य के एजेण्ट फारसाइथ की अदालत में भेज दिया। वह भी वहीं उपस्थित थे और उन्होंने भी कोवन के आदेश का समर्थन कर दिया। इसके बाद इन 16 कूका वीरों को भी तोप से उड़ा दिया। एक कूका छोटे कद का होने के कारण तोप के मुंह तक नहीं पहुंच सका। उसने कुछ ईंटें जमा की और उन पर खड़ा होकर शहीद बना। पहले कोवन ने अकेले जो कुछ किया था अब फोरसाइथ ने भी वही किया। भारत सरकार ने इन हत्याओं को पूर्णतया अवैध घोषित किया और डिप्टी कमिश्नर को पूरी जांच होने तक मुअत्तिल कर दिया गया।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

गुरु रामसिंह का बर्मा निर्वासन

अंग्रेजी सत्ता को सद्गुरु रामसिंह जी और उनके प्रमुख सूबों के विरुद्ध कोई ऐसी सामग्री नहीं प्राप्त हो सकी कि उन पर मुकदमा चलाया जा सके। परन्तु अधिकारियों की सूचनाओं से सरकार को इस बात की चिन्ता बढ़ती जा रही थी कि नामधारी पंथ और कूका आन्दोलन की शक्ति को किस प्रकार रोका जाए। सद्गुरु रामसिंह का कार्यक्रम और कार्यप्रणाली शांतिमय थी। वह सशस्त्र संघर्ष या हिंसात्मक उत्पात के सर्वथा विरुद्ध थे। उन्होंने पूरी शक्ति से अपने अनुयायियों को नियन्त्रण में रखने का सदा और पूर्ण प्रयत्न किया। जब अन्त में सरदार हीरासिंह और सरदार लहनासिंह ने उनका आग्रह, अनुनय-विनय और आदेश मानने में आनाकानी की और लगभग 124 कूकों के साथ मालेरकोटला राज्य पर आक्रमण करने चल दिए तो सद्गुरु ने डिप्टी इन्सपेक्टर पुलिस, सरफराज खां और लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर लारेन्स कोवन को तुरन्त सूचना और चेतावनी दी। वे इनको समय पर रोकने में असमर्थ रहे और अपने कर्त्तव्य पालन में ढिलाई की। बाद में जितने भी मुकदमे चले और बयान हुए उनमें सद्गुरु रामसिंह जी पर कोई भी आरोप न लग सका। उनके विरुद्ध केवल एक अस्त्र भारत सरकार के पास रह गया था कि वह बिना मुकदमा चलाए मालेरकोटला काण्ड का बहाना लेकर कुछ सूबों सहित गुरु रामसिंह को 1818 के रेग्युलेशन-तीन के अधीन देश से निर्वासित कर दे।

इसी अभिप्राय से 16 जनवरी को पंजाब के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर ने वाइसराय को तार दिया कि "देश सुरक्षित नहीं है जब तक नेता मुक्त हैं। अतः मैंने फोरसाइथ (कमिश्नर, अम्बाला) को रामसिंह और प्रमुख सूबों को गिरफ्तार करने का अधिकार दे दिया है।" कोवन ने गुरु रामसिंह को 16 जनवरी को मलौध बुलाकर भैणी वापिस भेज दिया था।

इस तार के बाद 16 जनवरी, 1872 को ही पंजाब सरकार के सेक्रेटरी ने भारत सरकार के सेक्रेटरी को अपने पत्र में लिखा कि लेफ्टिनेण्ट गवर्नर ने गुरु रामसिंह और उनके अत्यन्त प्रभावशाली 9 सूबों की गिरफ्तारी के आदेश दे दिए हैं। जितनी जल्दी संभव होगा गुरु रामसिंह गिरफ्तार किए जाएंगे। गिरफ्तारी के बाद वह तुरन्त इलाहाबाद भेज दिए जाएंगे क्योंकि लेफ्टिनेण्ट गवर्नर उनको पंजाब में रखना उचित नहीं समझते। साथ ही प्रार्थना की कि वाइसराय उनके वारण्ट 1818 के रेग्युलेशन-तीन के अन्तर्गत जारी कर दें। दूसरा पत्र भेजकर अगले दिन पहाड़ासिंह का नाम भी इस सूची में शामिल करने की प्रार्थना की। इसके बाद कमिश्नर फोरसाइथ, ने संक्षेप में गुरु रामसिंह के पंजाब से निष्कासन और राजबन्दी बनाने के कारण दिए जिनमें केवल उसकी अपनी आशंकाएं और मत का ही विश्लेषण मात्र है। गुरु रामसिंह का कोई अपराध निर्धारित नहीं किया जा सका।

कमिश्नर ने कर्नल बेली को आदेश दिया कि सद्‌गुरु रामसिंह को गिरफ्तार करें। लुधियाना से चलने पर मार्ग में बेली को ज्ञात हुआ कि डिप्टी इन्सपेक्टर, गुलाबसिंह उन्हें गिरफ्तार करने जा चुका है। कर्नल बेली रुक गए। गुलाबसिंह ने भैणी के बाहर से ही गुरु जी को सरकार द्वारा बुलाए जाने का संदेश भेजा। सद्‌गुरु तो उस समय की प्रतीक्षा में ही थे। उन्होंने काले वस्त्र धारण किए और घोड़ी पर न चढ़, बैलगाड़ी पर ही सवार होकर चलने को तैयार हो गए। उनके पिता जी प्रेम से द्रवित हो उठे। सद्‌गुरु के अनुज महाराज बुधसिंह जी को उन्होंने उपदेश दिया, "......संगत को धैर्य दें और देशसेवा में संलग्न रखें।" सद्‌गुरु जी ने जयकार करा के गाड़ी चलाने का आदेश दिया। भैणी से एक मील दूर लुधियाना रोड पर एक गांव के निकट बहुत सी पुलिस और गोरखा पलटन प्रतीक्षा में थी। सद्‌गुरु इस लश्कर के साथ रात होते-होते लुधियाना पहुंच गए। कमिश्नर फोरसाइथ ने लिखा है कि "मैंने कूकों के नेता रामसिंह को बंदी बनाने का आदेश लाट साहब से मांगा किन्तु सफल न हुआ। अतः बिना आज्ञा प्राप्त किए ही प्रस्थान करने को विवश हो गया। मेरा काम रामसिंह को गिरफ्तार कराना था जो बड़ी सतर्कता से करना था। मैंने उन्हें रात को अपने पास बुलाया और आदेश दिया कि एक स्पेशल रेलगाड़ी तैयार रखी जाए। जैसे ही वह लुधियाना पहुंचें वैसे ही पहले से तैयार गारद को उन्हें सौंप दिया जाए और ट्रेन द्वारा दिल्ली भेज दिया जाए। इसकी सूचना तार द्वारा लैफ्टिनेण्ट गवर्नर को दे दी और उन्होंने इसकी पुष्टि कर दी।"

18 जनवरी, 1872 को प्रातः 4 बजे लुधियाना से सद्‌गुरु रामसिंह को

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

अपने सेवक नानूसिंह, सूबा लक्खासिंह, सूबा साहबसिंह, और सूबा जवाहरसिंह के साथ इलाहाबाद रवाना किया गया। वे इलाहाबाद पहुंचने पर प्रयाग के किले में नजरबन्द किए गए।

सद्गुरु रामसिंह को इलाहाबाद भेजने के बाद फोरसाइथ ने कर्नल बेली को भैंणी भेजा। बेली 18 जनवरी को प्रातः 40 गोरखा घुड़सवारों के साथ भैंणी पहुंचा। वहां से सूबों को बन्दी बनाकर लुधियाना भेज दिया। इनमें से चार को स्पेशल ट्रेन से इलाहाबाद भेजा गया। बेली के कथनानुसार भैंणी में उस समय केवल 150 कूके थे। उनमें कई स्त्रियां भी थीं जो चर्खा चलातीं और गुरु-घर की सेवा करती थीं। सब को भैंणी से बाहर निकाल दिया गया। सद्गुरु रामसिंह के घर की तलाशी ली गई। उस समय आसपास के गांवों के नम्बरदार भी आ गए थे। वहां से 36 फ़रसे, अनेकों चक्र, 9 गंडासे तथा बहुत सी लाठियां और खुखरियां बरामद हुईं। वहां दो दिन की तलाशी में भिन्न-भिन्न स्थानों से 1500 रुपये नकद और सोने-चांदी के आभूषण मिले। इनके अतिरिक्त बहुमूल्य दुशाले, किनारियां और बेल-बूटों वाले वस्त्र भी प्राप्त हुए। यह सब सामान बंद करके सरकारी कोष में सुरक्षित रखने के लिए लुधियाना भेज दिया गया। घरों में ताले लगा दिए गए। गुरु-घर पर आश्रित रहने वालों को वहां से निकाल दिया गया। एक डिप्टी इन्सपेक्टर के अधीन 20 सिपाहियों की गारद वहां रख दी गई। पशुशाला की रक्षा के लिए कुछ व्यक्ति छोड़ दिए गए। वहां 22 पशु थे। घर में केवल सद्गुरु के 90 वर्षीय पिता, छोटे भाई तथा सुपुत्री थीं। उनकी सेवा के लिए दो स्त्रियों और तीन पुरुषों को भैंणी में रहने का आदेश दिया गया। गुरु की कपड़ों की दुकान के मैनेजर तथा निजी सेवक को भी रहने दिया गया। इसके बाद इस सूचना के आधार पर कि भैंणी में दो लाख रुपये और अगणित अस्त्र-शस्त्र किसी गुप्त स्थान में पड़े हैं, पंजाब सरकार के आदेश पर भैंणी में दो बार बड़ी सख्ती से तलाशी कराई गई पर खजाने और हथियार कहीं नहीं मिले।

सद्गुरु रामसिंह को उनके सूबों तथा पटियाला के सरदार मंगलसिंह के साथ 10 मार्च, 1872 तक इलाहाबाद के किले में ही बन्द रखा गया। 8 मार्च को भारत सरकार के सचिव ने पंजाब सरकार के सचिव को लिखा कि गवर्नर-जनरल-इन-कौन्सिल की राय में रामसिंह को नजरबन्द रखने और छोड़ने पर देश की शांति और स्थिरता भंग होने के पर्याप्त प्रमाण हैं। उनके अतिरिक्त बाकी जो 10 सूबे हैं

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

उनके विरुद्ध भारत सरकार के पास पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं कि वे वास्तव में खतरनाक व्यक्ति हैं।"

भारत सरकार ने 9 मार्च, 1872 को बर्मा के चीफ कमिश्नर को लिखा कि "रामसिंह को बर्मा में नजरबन्द रखना है। तुम्हें आदेश दिया जाता है कि उन्हें लेकर अपनी हिरासत में रखो और गवर्नर जनरल-इन-कौन्सिल के आदेश तथा 1818 के रेग्युलेशन-तीन के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार उनसे व्यवहार करो।" गुरु रामसिंह को जलयान द्वारा 11 मार्च, 1872 को बर्मा रवाना कर दिया गया। गुरु रामसिंह के साथ एक नौकर था। आदेश था कि गुरु रामसिंह के साथ कोई कठोरता न बरती जाए। उन्हें व्यायाम करने और स्वास्थ्य के लिये वायुसेवन की पूरी स्वतंत्रता दी जाए। 16 मार्च, 1872 को रामसिंह एक सेवक के साथ रंगून पहुंचे। वहां उनको सेण्ट्रल जेल में एक अलग कक्ष में रखा गया। उस स्थान के सम्बन्ध में बर्मा के जेलों के इन्सपेक्टर जनरल ने सूचना दी कि, राजवन्दी रामसिंह को मकान की ऊपर की मंजिल में रखा गया है। इसमें कुआं, रसोई घर और शौचालय हैं। उनको पलंग, कुर्सियां, पंखा आदि दिए गए हैं। वह जो चाहें करने को स्वतंत्र हैं और अपने घर में घूमने-फिरने को सर्वथा मुक्त हैं। रात में ताला नहीं लगाया जाता। गर्म मौसम में वह बाहर जमीन पर सोते हैं। उन पर केवल इतना ही प्रतिबन्ध है कि वह बाहर दुनिया से सम्पर्क नहीं रख सकते। उनके पास उनके एक सेवक के अतिरिक्त तीन और उच्च वर्ण के हिन्दू सेवा के लिए रखे गए हैं। उनके पास एक गाय भी है। उनको हर प्रकार के भोजन की सुविधा है यद्यपि उनकी आवश्यकताएं साधारण हैं। उन पर तथा उनके सेवक नन्नूसिंह पर 40 रुपया मासिक का व्यय है। सब सामान पर कुल 165 रुपया व्यय किया गया है। उनका स्वास्थ्य अच्छा है परन्तु वह उदास और बेचैन रहते हैं। विशेषकर रात में गरमी की शिकायत करते हैं, यद्यपि जिस मकान में उनको रखा गया है वह इतना ठण्डा है जितना कोई भी और स्थान इस गर्म मौसम में रंगून में हो सकता है। उनके सेवक नन्नूसिंह ने लिखित वचन दे दिया है कि वह रामसिंह के साथ रहने के लिए उन सब प्रतिबन्धों को स्वीकार करेगा जो सरकार उस पर लगाएगी।

जो प्रतिबन्ध सद्गुरु रामसिंह पर लगाए गए उन से, जेल में रहते हुए उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा। उनको बुखार [illegible] और [illegible] चिड़चिड़े हो गए। इस पर बर्मा के चीफ कमिश्नर ने प्रस्ताव किया कि रामसिंह को उस

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

भवन में रखा जाए जिसमें छावनी का डाकखाना था और जिसमें दिल्ली के भूतपूर्व बादशाह, बहादुरशाह जफर, को रखा गया था। भारत सरकार की स्वीकृति पर सद्-गुरु रामसिंह को पांच महीने बाद सेण्ट्रल जेल रंगून से हटाकर उस बंगले में रखा गया। सद्गुरु रामसिंह 18 सितम्बर, 1880 तक इसी बंगले में रहे। गुरु के चेले लुकछिपकर उनके पास पहुंचते रहे और कुछ पत्र-व्यवहार भी होता रहा। जब सरकार इस पत्र-व्यवहार को न रोक सकी तो 21 सितम्बर को गुरु को नाव पर दक्षिण बर्मा में समुद्र तट पर स्थित मर्गोई स्थान पर पहुंचा दिया गया। समुद्र-तट पर उन्हें एक बंगले में ठहराया गया। उन पर उस समय कठिन पहरा भी नहीं था। उनके शिष्य वहाँ भी उनके पास पहुंचते रहे। बाद में सरकार ने घोषणा की कि 29 दिसम्बर, 1885 को मर्गोई में उनका देहान्त हो गया। 30 दिसम्बर को प्रातः 9 बजे टेनासिरम में उनका दाह-संस्कार किया गया। वहीं पर उनकी समाधि बनाई गई। इसके विपरीत नामधारियों का यह विश्वास है कि सद्गुरु जी चमत्का-रिक ढंग से भाग निकले और अपने इसी शरीर में वर्तमान हैं तथा समय आने पर वह अवश्य प्रकट होंगे। इसी एक बात पर आज तक उनके अनुयायी उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चल रहे हैं। उनकी सद्गुरु रामसिंह में अटूट श्रद्धा और भक्ति है और इसी कारण उनका नाम प्रत्येक नामधारी कूके की जबान पर है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

कूका विद्रोह का परिणाम

कूका आंदोलन के प्रवर्तक और नामधारी पंथ के संस्थापक सद्गुरु रामसिंह आदर्श समाज सुधारक थे। वह उच्चकोटि के देशभक्त, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ और दक्ष संगठनकर्ता थे। उन्होंने स्वधर्म और स्वराज्य के लिए स्वदेशी और बहिष्कार के साधनों का अहिंसात्मक रूप में प्रयोग किया। व्यावहारिक कारणों से भी वह हिंसा के खिलाफ़ थे। वह भलीभांति समझते थे कि अंग्रेजी शासकों को सशस्त्र संघर्ष में परास्त करना उस समय सम्भव नहीं था। इसी कारण वह अपने संगठन को बहुत सम्भाल कर शांतिपूर्ण मार्ग पर चला रहे थे। उनके अनुपम और अद्भुत प्रभाव और कार्यशैली का यह एक आश्चर्यजनक उदाहरण था कि उन्होंने अमृतसर से बूचड़ों की हत्या करके आए अपने अनुयायियों को उनके अपराध स्वीकार करा के सहर्ष मृत्यु की सजा के लिए अमृतसर भेज दिया। इसके बाद जब सरदार हीरासिंह और सरदार लहना-सिंह के नेतृत्व में लगभग 124 कूके मलोध और मालेरकोटला पर आक्रमण करने चले तो उन्होंने हर प्रकार से अनुनय-विनय कर उन्हें रोकने का पूरा प्रयत्न किया। जब वह उसमें सफल न हुए तो उन्होंने इसकी पूरी सूचना डिप्टी इन्सपेक्टर और डिप्टी कमिश्नर को दी। यह बड़ा साहस और बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य था। अंग्रेज अधिकारियों ने न तो इस कार्य की भली प्रकार सराहना की और न समय पर इस सूचना से लाभ उठाया। इसके विपरीत उन पर यह मिथ्यारोप लगाया कि वह अपने अनुयायियों को नियंत्रित न रख सके और न अमृतसर आदि की दुर्घटनाओं की सूचना सरकार को दी। बस इन्हीं दो आरोपों पर 1818 के रेग्युलेशन-तीन के अन्तर्गत उन्हें राजबंदी बनाकर निर्वासित किया गया।

इसमें कोई संदेह नहीं कि गुरु रामसिंह बड़े कुशल संगठनकर्ता थे। उनका पंजाब को 22 सूबों में बांटना, अपनी डाक का पूरे सूबे में सफल आयोजन करना, रेल, सरकारी स्कूल, कचहरी और सरकारी नौकरियों तथा

विदेशी माल का बहिष्कार और स्वदेशी तथा खादी का प्रचार उनकी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का प्रमाण था। विदेशी शासन से मुक्ति के लिए 1920 से लेकर भारत के स्वतंत्र होने तक महात्मा गांधी ने भी इसी कार्यक्रम को पूरा करने का प्रयास किया। इस कार्य में वह गांधीजी के अग्रदूत थे।

उस महान और निर्दोष गुरु देशभक्त को भारत सरकार ने राजवंदी बनाकर पंजाब से प्रयाग और प्रयाग से कलकत्ता होकर रंगून भेजा। जब वह कलकत्ता पहुंचे तो अंग्रेजों के पत्र 'दि इंग्लिशमैन' ने अपने 14 मार्च, 1872 के अंक में यह समाचार प्रकाशित किया—"रामसिंह, कूका नेता, राजवंदी के रूप में सोमवार (12 मार्च) की सायं को कलकत्ता पहुंचे और शीघ्र ही रंगून भेज दिए गए। वह एक सेवक के साथ यूरोपियन पुलिस अधिकारी तथा देशी सिपाहियों की संरक्षता में लाए गए। वह 6 फुट से अधिक लम्बे और बहुत बूढ़े दीख पड़ते हैं। उनके बाल, दाढ़ी, मूंछें और कान के बाल सफेद हैं। हमें आशा है कि उनकी सावधानी से देखरेख की जाएगी।" इस समाचार से स्पष्ट है कि भारत-विरोधी अंग्रेजी पत्र ने भी सद्गुरु के प्रति सम्मान और समवेदनापूर्ण भाव व्यक्त किए और सरकार को उनकी समुचित देखभाल करने की चेतावनी दी थी।

1872 में मुस्लिम वहाबी आंदोलन अंग्रेजों के लिए भयंकर समस्या थी। कलकत्ता में चीफ जस्टिस नार्मन का दिन दहाड़े एक वहाबी अब्दुल्ला ने इस कारण वध कर दिया था कि उसने वहाबी नेता अमीरउद्दीन को दंड दिया था। इसी प्रकार अंडमान में शेर अली नामक वहाबी वंदी ने लार्ड मेयो का वध किया था। दूसरी ओर हिन्दुओं और सिखों ने पंजाब में सद्गुरु रामसिंह के नेतृत्व में कूका आंदोलन चलाया था जिसका बढ़ता हुआ प्रभाव अंग्रेजों को भयभीत कर रहा था। कुछ बूचड़ों को गोहत्या के अपराध में कूकों द्वारा मृत्यु के घाट उतारा गया। मलौध और मालेरकोटला में जो घटनाएं हुई उनके परिणामस्वरूप लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर ने 49 कूकों को विना मुकदमा चलाए केवल अपने आदेश से तोपों से उड़वा दिया और अगले दिन मुकदमे का ढोंग रचकर अम्बाला के कमिश्नर फोरसाइथ ने 16 कूकों को तोप से उड़वा दिया। इस पूरे समाचार को पत्रों ने सविस्तार प्रकाशित किया और कोवन की बहुत कटु और तीव्र आलोचना की। एक पत्र ने लिखा : "अंग्रेजी राज की पूर्व में स्थिरता न्याय की चट्टान पर ठहरी है। चाहे कुछ भी हो हम आशा करते हैं हमारे शासक इससे विचलित न होंगे। कूकों से पंजाब को गम्भीर भय हो सकता है, परन्तु न्याय के हितों की रक्षा उससे भी अधिक जरूरी है।"

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जनवरी-फरवरी, 1872 के पत्रों में कूका-विद्रोह पर निरन्तर चर्चा हुई। एक पत्र ने लिखा : "किसने कोवन को अधिकार दिया था कि वह उन आदमियों को, जो उसके हाथ में थे और जिनके निकल भागने की कोई संभावना नहीं थी, तोपों से उड़वा दे ? हमें आशा है कि भारत और इंग्लैंड का जनमत इस प्रश्न का उत्तर माँगेगा और लेगा।...क्या कोई भी यह सोचता है कि यह भारत या इंग्लैंड के हित में है कि अपने को मजबूत बनाने के लिए लोगों को भयभीत करके, तोपों के मुंह पर खड़ा कर एक साथ सब को उड़ा दिया जाय ?" क्या कोई सभ्य सरकार ऐसा कर सकती है ? कोई भी सभ्य पाश्चात्य राष्ट्र ऐसा नहीं है जिसमें दीन से दीन का जीवन कानून की दृष्टि में उतना ही पवित्र न समझा जाता हो जितना कि राजा का ताज।"

"यदि भारत सरकार कोवन के कृत्य का उत्तरदायित्व लेती है तो उसे अपने देश में जनमत के न्यायालय के समक्ष उत्तर देना पड़ेगा ?"

"क्या हमारे पाठक विश्वास करेंगे कि 66 पुरुषों और दो स्त्रियों का इस बुरी तरह पीछा किया गया कि वह बिना भोजन के इतने थक गए और पस्त हो गए थे कि चार आदमियों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया ?"

"एक समय था, जिसकी स्मृति अभी भी जीवित है, जब इंग्लैंड कम से कम इतने ही बड़े खतरे में था जितना कि पंजाब जहाँ ये लोग तोप से उड़ाए गए। परन्तु इंग्लैंड में शासन था। किसी भी दशा में अपराधियों को किसी एक व्यक्ति की इच्छा पर दंड नहीं दिया जा सकता था।"

"कहा जाता है कि कोवन ने अपने उत्तरदायित्व पर जो किया वह गदर के वीरों के कृत्यों के समान था। पर यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो इन दोनों परिस्थितियों में कोई समानता नहीं। कोवन के पास शानदार अंग्रेजी सेना थी। कुछ ही घंटों में वह उन आदमियों पर मुकदमा चलाने का अधिकार प्राप्त कर सकता था। उसने उन पर कोई मुकदमा नहीं चलाया।"

"जिन्होंने यह नर-हत्याकांड किया उनके इस कृत्य को किसी भी ज्ञात अथवा कल्पित बातों से उचित नहीं ठहराया जा सकता। यह तो जोश के पथभ्रष्ट अधिकारियों द्वारा किए गए पाशविक अत्याचार जैसा था।"

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

इस प्रश्न पर ब्रिटिश पार्लियामेंट में भी प्रश्न उठे। बहुत वादविवाद के पश्चात ग्राण्ट डफ, अण्डर सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया, ने अंतिम रूप से माना कि—"किसी प्रकार का कोई मुकदमा नहीं चलाया गया।" (इस उत्तर पर सदन में बहुत आश्चर्य प्रकट किया गया।)

1 मार्च, 1872 को हाउस आफ कामन्स में कूका विद्रोह पर प्रश्नोत्तर में ग्राण्ट डफ ने बड़े दुख से सभी घटनाओं की सत्यता को स्वीकार किया। अन्त में उसने बताया कि "जब 19 जनवरी को घटनाओं की सूचना मुझे मिली तो मैंने लेफ्टिनेण्ट-गवर्नर पंजाब को तार दिया : "अपने स्पष्ट आदेश के बिना कूकों का फौरी वध किया जाना रोक दो··· (हर्ष ध्वनि)।" फिर उन्होंने कहा कि स्थल पर विशेष जांच के आदेश दिए गए हैं। सेक्रेटरी आफ स्टेट-इन-काउंसिल ने भारत सरकार को सूचित कर दिया है कि पंजाब के लेफ्टिनेण्ट-गवर्नर की रिपोर्ट की व्यग्रता से प्रतीक्षा की जा रही है।

"जो कुछ कोवन ने बिना मुकदमा चलाए किया उससे सिद्ध होता है कि यह अत्यधिक बुद्धिहीनता और क्रूरता का ऐसा काम था जैसा कभी भी किसी अंग्रेज ने भारत में नहीं किया। मि० फोरसाइथ ने इस कृत्य का समर्थन किया। भारत के स्वतंत्र पत्रकारों और मित्रों ने अपना उचित कर्तव्य समझा कि 'इस कृत्य की भर्त्सना की जाए'।"

इन तमाम आलोचनाओं और जनमत के रोष का केवल इतना ही परिणाम निकला कि सरकारी जांच-पड़ताल के बाद लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर कोवन को गवर्नर-जनरल-इन-कौंसिल के आदेशानुसार नौकरी से हटा दिया गया। पर उन्हें 300 रुपया मासिक पेंशन दी गई। अम्बाला के कमिश्नर फारसाइथ को डाँट-फटकार के बाद सूबा अवध में उसी पद और वेतन पर तबादला कर दिया गया।

इस पूरे मामले पर सर हेनरी काटन का मत था : "मैंने अपनी सेवा-अवधि में इतने भड़काने वाले भयानक दंड नहीं देखे। ऐसे व्यक्ति बहुत से हैं जिन्होंने मेरी तरह यह समझा और यह विचार रखते हैं कि भारत सरकार का निर्णय बहुत ही नाकाफी था।"

26 मार्च, 1872 को सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया की ओर से भारत सरकार को यह पत्र प्राप्त हुआ :

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

"मैं सन् 1818 के एक्ट 3 के अधीन गुरु रामसिंह और 10 प्रभावशाली सूबों के नजरबंन्द किए जाने को स्वीकृति प्रदान करता हूं।"

"मैं कोवन, डिप्टी कमिश्नर लुधियाना के मुअत्तल किए जाने की स्वीकृति देता हूं। 49 कूका विद्रोहियों के मारे जाने के उनके कृत्य की पूरी जांच हो। मैं जांच की रिपोर्ट के परिणाम और भारत सरकार की राय की प्रतीक्षा करूंगा।"

लेकिन सरकार तो कूका नाम को ही मिटाने पर तुली हुई थी। दमन नीति के कारण अत्याचार कल्पनातीत स्थिति को पहुंच गया था। सद्गुरु के उत्तराधिकारी और घरवालों पर जो अत्याचार किए गए उसकी कथा भयानक और विस्तार अनन्त है।

भैंणी के प्रवेश-द्वार पर पुलिस चौकी तैनात कर दी गई। नामधारियों के गुरु-दर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया गया। संक्षेप में भैंणी को एक प्रकार से बन्दीगृह में परिवर्तित कर दिया गया। 6 वर्ष तक किसी भी सिख को भैंणी नहीं जाने दिया गया। उसके बाद सिखों को गुरुद्वारे में दर्शन की छूट तो मिली परन्तु उस पर भी इतने प्रतिबंध लगाए गए थे कि अनेकों लोग बिना दर्शन किए ही लौट जाने को विवश हो जाते थे। जो दर्शन किए बिना नहीं जाते उन्हें अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता था।

प्रत्येक नामधारी कूका विद्रोही माना जाता था। उनको अपने-अपने गांव में नजरबन्द कर दिया गया था। नगरों, कस्बों और ग्रामों की धर्मशालाओं पर सरकारी रिपोर्टर नियुक्त थे जो कूकों के आवागमन और कार्यों की रिपोर्ट देते थे। पांच से अधिक कूकों का किसी भी स्थान पर एकत्रित होना वर्जित था। सारे पंजाब में दीवान होना असम्भव हो गया। अखंड-पाठ करने और कराने के अपराध में कूकों को पांच से सात वर्ष तक के कारावास का दण्ड दिया गया। जुर्माने कठोरता से वसूल किए गए। कुछ का तो कारावास में ही प्राणांत हो गया।

गुरु रामसिंह के अलावा, बहुत से सूबे भी पंजाब से निकाल दिए गए। कुछ चुनार और असीरगढ़ के किलों में और कुछ मोलमीन (बर्मा) और अदन में रखे गए। इनमें से चार की जेल में ही मृत्यु हुई। यद्यपि भारत सरकार चाहती थी कि इन पर मुकदमा चलाया जाए पर पंजाब सरकार ने इसका विरोध किया। उसका कहना था कि उनके खिलाफ गवाह पेश करना प्रायः असम्भव होगा।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

गुरु के देश से निर्वासन के बाद भी कूके सक्रिय बने रहे। अप्रैल 1879 और अप्रैल 1881 के बीच गुरु रामसिंह का एक सूबा, गुरुचरण सिंह कूका, मध्य एशिया में रूसी अधिकारियों से मिला। सरकारी कागजात से पता चलता है कि उसने गुरु रामसिंह के उत्तराधिकारी बुद्धसिंह के संदेश रूसियों को पहुंचाए और उनके उत्तर प्राप्त किए। गुरुचरण सिंह का मुख्य उद्देश्य नामधारी आन्दोलन के लिए रूसी सहायता प्राप्त करना था। रूसियों से उत्तर प्राप्त कर एक कूका रामसिंह से मिलने बर्मा गया था। बिशनसिंह नामक एक कूके ने भी रूसियों से सम्पर्क स्थापित किया था।

1868-69 में नामधारी कश्मीर की सेना में भर्ती हुए। अक्टूबर 1869 तक 200 से 250 कूके भर्ती हो चुके थे। कूका रेजीमेंट के विषय में जानकारी हासिल करने के लिए भारत सरकार ने एक अधिकारी 1869 के अन्त में जम्मू भेजा था। बाद में अंग्रेजों के प्रभाव में आकर महाराजा ने कूकों को सेना से निकाल दिया।

1869 में कूकों का एक सरदार नेपाल के प्रधानमन्त्री राणा जंगबहादुर से मिला। राणा ने गुरु रामसिंह को 500 रुपये, एक तिब्बती घोड़ा, दो खुखरियां, एक दुशाला और एक माला उपहार में भेजे। गुरु ने राणा के अनुरोध पर कुछ जानवर भेजे। 1871 में अंग्रेजों ने नेपाल पर दबाव डाला कि वह नामधारियों से कोई सम्पर्क न रखे। राणा ने जो 16 सिख अपनी सेना के प्रशिक्षण के लिए रखे थे वे हटा दिए गए।

पंजाब सरकार ने भारत सरकार को अपने 2 अप्रैल, 1872 के एक पत्र में लिखा था कि सब स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि कूकों ने होली, दीवाली या वैसाखी के सम्मेलनों में या किसी अन्य उचित अवसर पर विद्रोह करने का निश्चय किया था। विद्रोह के लिये सियालकोट, गुजरांवाला के जिलों, अम्बाला कमिश्नरी और सतलुज पार के राज्यों में भिन्न-भिन्न समय नियत किए गए थे। साथ ही यह भी घोषित किया था कि विद्रोह का प्रारम्भ अमृतसर या आनन्दपुर में होगा। विद्रोह आरम्भ करने का कोई स्थान नियत नहीं है। उपयुक्त समय की प्रतीक्षा है।

"कूका सम्प्रदाय के विद्रोह को रोकने के लिए पंजाब सरकार ने पर्याप्त प्रबंध इस सीमा तक किए कि कुछ महीनों में ही कूकों ने पंजाब के सब जिलों में अपने ठीक-ठीक नाम और पते बताने ही छोड़ दिए। इस पर भी ऐसे कूके पंजाब में पर्याप्त संख्या में हैं जो स्वयं अपने को कूका स्वीकार करते हैं।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

"कूका पंथ के प्रमुख नेताओं को प्रान्त से बाहर निकाल दिया गया है। जो प्रभावशाली व्यक्ति हैं उनकी गतिविधियों पर सावधानी रखी जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में जेलदारों और नम्बरदारों को उनके सम्बन्ध में सूचना देने का आदेश है।

"पूरे प्रान्त में कहीं भी कूके एक समय और एक स्थान पर पांच से अधिक एकत्रित नहीं हो सकते। कुल्हाड़ी, बरछें, लाठियां और अन्य अस्त्र-शस्त्र बिना आज्ञा के सार्वजनिक स्थानों पर ले जाना वर्जित है। पूरे सम्प्रदाय के लिये देख-रेख और सूचना देने की पूर्ण व्यवस्था कर दी गई है। अब ऐसा कोई भी छोटे से छोटा या महत्वपूर्ण आंदोलन नहीं चल सकता जिसकी सूचना सरकार को तुरन्त न मिल जाए।

"वाइसराय कमांडर-इन-चीफ की इस राय से सहमत ही हैं कि सिखों को हिन्दुस्तानी सेना से निकाल दिया जाए और भविष्य में उनको भर्ती न किया जाए और यही नियम पुलिस पर भी लागू होगा। इसी के अनुसार नामधारी सिखों के लिए यह आदेश दिया गया है कि उन्हें सेना और पुलिस से निकाल दिया जाए तथा भविष्य में उनकी भर्ती पूर्णतया बंद कर दी जाए।"

पंजाब और भारत सरकार ने बड़ी सतर्कता और सावधानी तथा कठोरता और क्रूरता से नामधारी-कूका आंदोलन को दबाने और फिर से किसी भी प्रकार से न उभरने देने का प्रयत्न किया। उपरोक्त वर्णन से यह सिद्ध हो जाता है कि विदेशी सरकार के क्रूरतापूर्ण और असभ्य तथा पाशविक दमन से वीर कूकों की भावना, साहस और लगन मिट न सकी और 1947 तक स्वतंत्रता संग्राम में निरन्तर भाग लेते रहे।

उनकी सराहना करते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बड़े मार्मिक शब्दों में यह आशा और विश्वास प्रकट किया था :

> "श्री सद्गुरु रामसिंह जी ने अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए आज से 75 वर्ष पहले जो महान गौरवशाली प्रयास किया था उसके महत्व से कोई भी भारतीय इन्कार नहीं कर सकता। कांग्रेस ने आपके बताए और दिखाए हुए मार्ग पर चलकर शानदार सफलताएं प्राप्त की हैं। 75 वर्षों का समय बीत जाने पर भी कुछ कार्यक्रम पुराना नहीं हुआ है। इसके

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

प्रयोग प्रारम्भ करने में आपने बड़ी कठिनाइयों और कष्टों का सामना किया था।

"मुझे विश्वास है कि यदि प्रत्येक सिख उस मार्ग पर जो आपने दिखाया था चल पड़े तो भारतीय स्वतन्त्रता युद्ध में बेहद सरगर्मी पैदा हो जाए और आश्चर्य नहीं कि सिखों की आजमाई हुई वीरता के कारण इस शानदार रवायतों वाले देश की जंजीरें बहुत जल्द टूट जाएं।"

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के उद्‌गार सद्‌गुरु रामसिंह और उनके देशव्यापी क्रांतिकारी आन्दोलन के सम्बन्ध में बड़े प्रेरक और उत्साहवर्धक हैं—

"गुरु रामसिंह जी के फहराए हुए आजादी के झण्डे के नीचे नामधारी कूकों ने जो कुर्बानियाँ की हैं उन पर देश सदा गौरव करेगा। अब फिर भारतीयों के देशप्रेम की परीक्षा होने वाली है। पौन सदी से अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन का अनुभव रखने वाले नामधारी वीर कूकों से यही आशा है कि वह स्वतन्त्रता का झंडा उठाकर आगे-आगे बढ़ते दिखाई देते रहेंगे और दूसरे देशवासियों को भी बलिदान के लिए उत्साहित करते रहेंगे। गुरु रामसिंह जी भारत में अहिंसात्मक असहयोग के सर्वप्रथम नेता रहे।"

जहाँ उपरोक्त दो महान् देशभक्तों के उद्‌गार सद्‌गुरु रामसिंह के सम्बन्ध में उद्धृत किए गए हैं वहाँ उनके सम्बन्ध में उनके विरोधी सरकारी पक्ष का वक्तव्य भी महत्वपूर्ण है। अम्बाला के भतपूर्व कमिश्नर जे० डब्लू० मैकनब ने 4 नवम्बर, 1871 को कूका आन्दोलन के सम्बन्ध में अपनी विस्तृत रिपोर्ट में सरकार को लिखा:

"कूका आन्दोलन के नेता का मन्तव्य प्रारम्भ में चाहे जो कुछ भी रहा हो, परन्तु अब तो उनका लक्ष्य राजनैतिक है। वह एक ऐसे पंथ का अद्वितीय नेता है जो अपने स्वभाव के अनुसार खालसा राज्य को पुनःस्थापित करने का उद्देश्य रखने के कारण अंग्रेजों का शत्रु है। पहले रामसिंह को गुरु नानक जी का अवतार समझा जाता था पर अब उसे योद्धा-गुरु गोविन्द सिंह जी का रूप माना जाता है।"

अमर शहीद सरदार भगतसिंह यह शेर कहा करते थे—

"वे सूरते इलाही किस देश बसतियां हैं,
अब जिनके देखने को आंखें तरसतियां हैं।"

कूका लोग अब भी यह विश्वास करते हैं कि उनके गुरु अवश्य प्रकट होंगे।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

पुस्तक सूची

1. क्रांतिकारी सद्गुरु रामसिंह : ले० संत निधानसिंह आलिम, प्रकाशक—नामसंगम, दिल्ली।
2. गुरु रामसिंह एण्ड दि कूका सिख (डाकूमेण्ट्स) (अंगरेजी), कम्पाइल्ड वाई नाहरसिंह एम० ए० । प्राप्ति स्थान—अमृत बुक डिपो कं०, कनाट सर्कस, नई दिल्ली।
3. विप्लव यज्ञ की आहुतियां, सम्पादक एवं प्रकाशक बटुकनाथ अग्रवाल, क्रांतिकारी प्रकाशन, लाजपत रोड, मिर्जापुर।
4. आर्म्ड स्ट्रगल फार फ्रीडम (अंग्रेजी) : ले० साहित्याचार्य श्री बाल शास्त्री हरदास, प्रकाशक—काल प्रकाशन, पूना।
5. "कूका रिवोल्ट" (अंग्रेजी): ले० एम० एम० अहलुवालिया।
6. "दी फ्रण्टियर मेल" अंग्रेजी साप्ताहिक में लेख-"सिख रिवोल्ट अगेन्स्ट ईस्ट इंडियन कम्पनी ।"
7. "आर्म्ड कन्फ्लिक्ट विद दि ब्रिटिश ": ले० रारोज आचार्य, हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड (अंग्रेजी), कलकत्ता, के 'कांग्रेस नम्बर' में।
8. "रिवाल्यूशनरी मूवमेण्ट इन इंडिया" (अंग्रेजी), ले० चमनलाल आजाद, दिल्ली ।
9. कूका पेपर्स (अंग्रेजी) ।
10. "सोर्स मैटीरियल (अंग्रेजी), नेशनल आरकाइव्ज आफ इंडिया, नई दिल्ली।
11. दी अदर साइड आफ द मैडल (अंग्रेजी), ले० एडवर्ड थाम्पसन।
12. कूका आउटब्रेक (अंग्रेजी), प्रकाशन—पालियामेण्ट, इंग्लैण्ड।
13. गुरुद्वारा रिफार्म मूवमेण्ट एण्ड सिख अवेकनिंग (अंग्रेजी), ले० प्रो० रुचीराम साहनी।
14. रणजीतसिंह (अंगरेजी), ले० सर एल ग्रिफिन।
15. ए शार्ट हिस्ट्री आफ द सिख (अंगरेजी), ले० सी० एच० पैन।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com